जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2543

VOLUME : 8 | ISSUE : 3 | MUMBAI, SEPTEMBER 2017 | PAGES : 40 | PRICE : ₹25

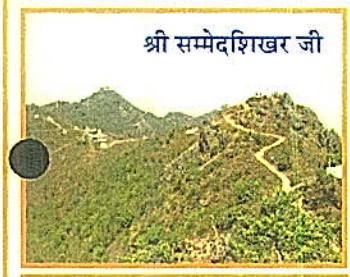

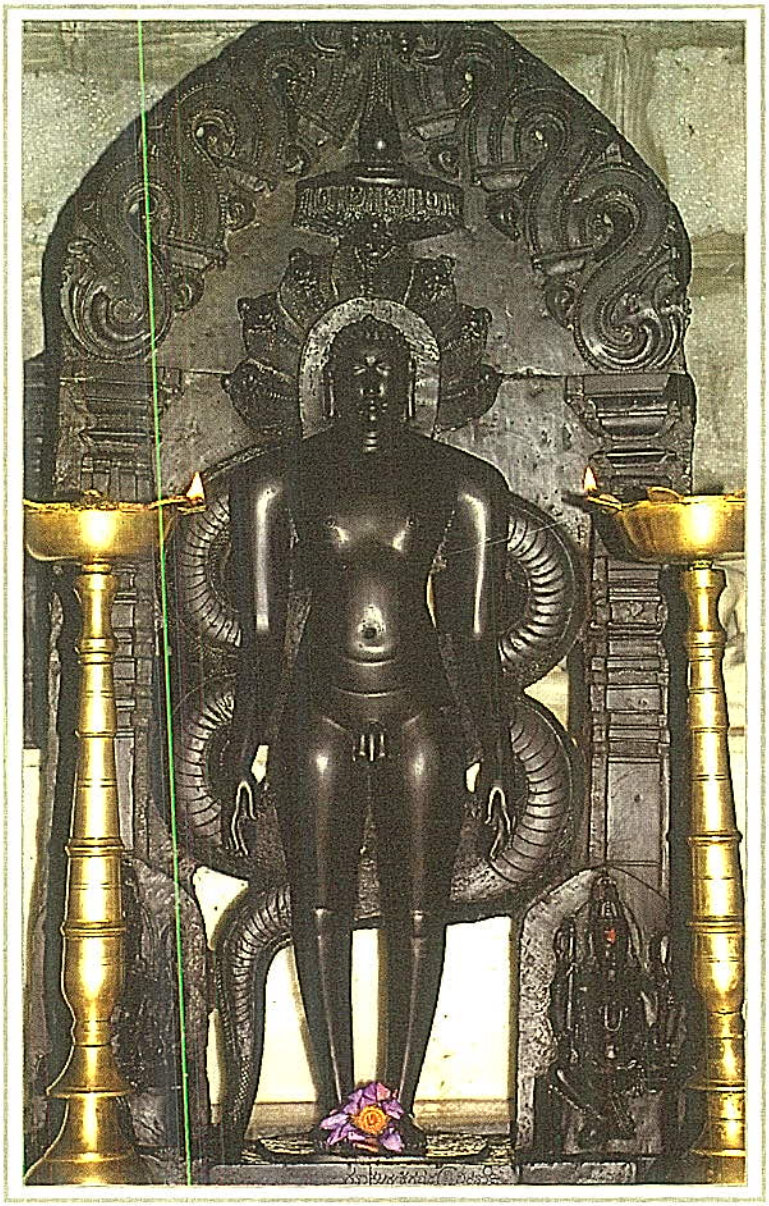

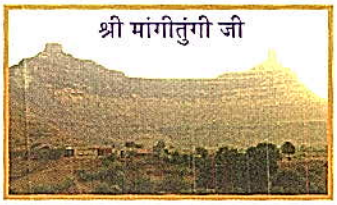

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान, स्तवननिधि (कर्नाटक)

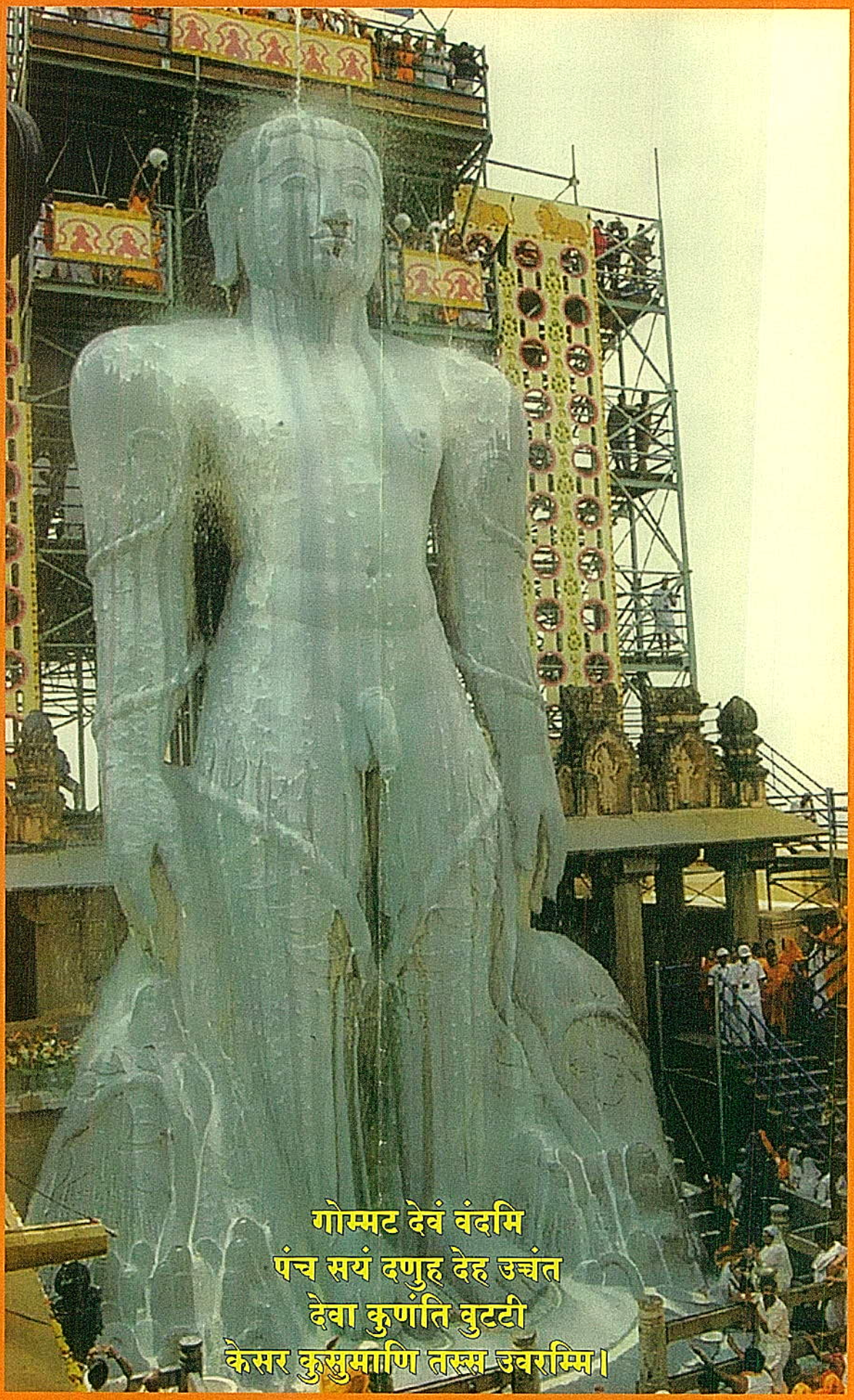
गोम्मट देवं वंदमि
पंच सयं दणुह देह उच्चंत
देवा कुणंति वुटटी
केसर कुसुमाणि तस्स उवरम्मि।

तीर्थों के विकास हेतु दान अवश्य दें

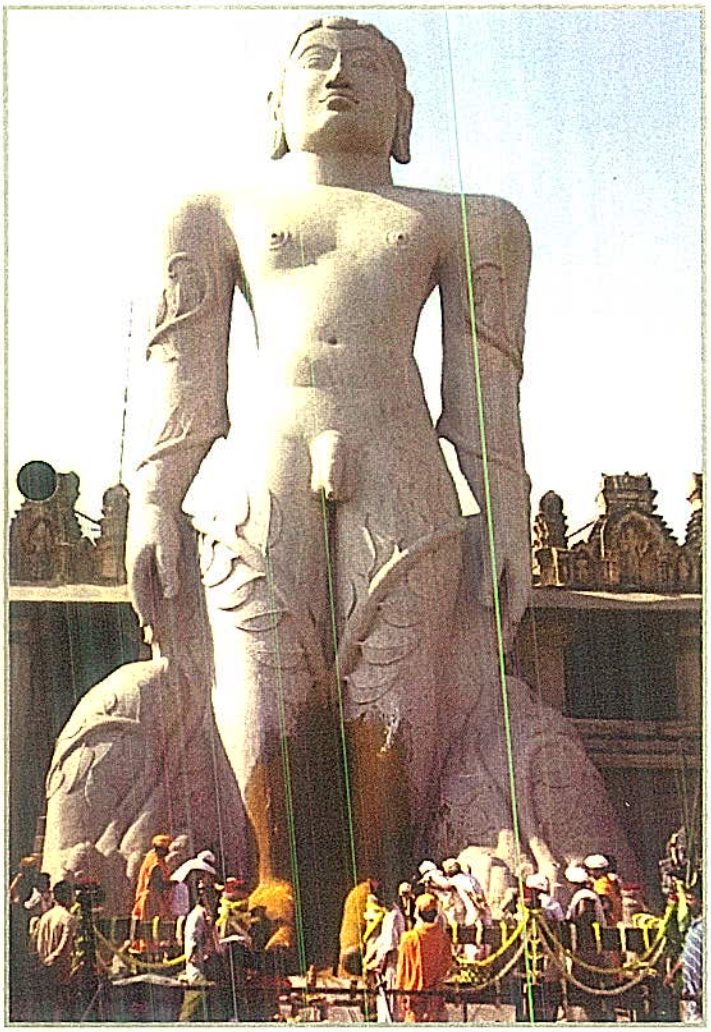

आप सभी ने 'पर्यूषण पर्व' आत्मिक आनंद से मनाया होगा। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष पद की गरिमा के अनुरूप यदि मुझसे जाने-अनजाने में आपके मन को ठेस लगी हो तो मैं हृदय से क्षमा मांगती हूँ। तीर्थों की रक्षा-सुरक्षा एवं कानूनी प्रक्रिया में यदि हमसे एवं हमारे पदाधिकारियों से कोई कमी प्रमादवश आपको नजर आई हो तो भी मैं करबद्ध क्षमा याचना करती हूँ एवं आपसे आपके सुझाव भेजकर हमें सचेत करने की विनय करती हूँ।

जब हम क्षमावाणी के संदर्भ में बात करते हैं तो हमें गर्व होता है हमारी श्रमण संस्कृति पर, वैसे तो वर्ष में तीन बार हम 'क्षमावाणी' मना सकते हैं लेकिन सार्वजनिक रूप से एक बार मनाते हैं, हमारे पूर्वाचार्यों ने क्षमा के संदर्भ में जो बातें कही हैं यदि वे हम मानने लगे तो हमारा जीवन धन्य हो सकता है, हमें जीवन जीने का मजा आ सकता है, बस एक ही बात करना है क्षमा अंत:करण से होनी चाहिए जीवन में आंतरिक निर्मलता हमें अंत:करण की क्षमा से ही प्राप्त हो सकती है। पर्वों की यह श्रृंखला हमें एक-दूसरे से जोड़ती है। पर्यूषण पर्व की शुरुआत उत्तम क्षमा से होती है और समापन क्षमावाणी से मिलता है। जैसे किसी माला का पहला मोती क्षमा से शुरू हो और आखिरी मोती क्षमा पर खत्म हो। दस मोतियों की यह माला जिसमें उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौंच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन और ब्रह्मचर्य के मोती गुथें हुए हैं, जो विश्वमैत्री का संदेश देते हैं। क्षमा की प्रवृत्ति को पर्व रूप दे कर, आप अपनी आध्यात्मिक निर्मलता का विकास करने में सन्नद्ध हो चुके होंगे; इस विश्वास के साथ कि क्षमा करने वाला सुख की नींद सोता है, किन्तु; अक्षमावान को शय्या पर शूल बिखरे प्रतीत होते हैं। आपने, अपनी आत्म-साधना में निश्चय ही अनुभूति का आस्वादन कर लिया होगा कि क्षमा केवल वाणी का विकास ही नहीं, वह अंत:करण की निधि है, जिसके कारण क्षमा-माधुर्य अंत:करण में वास करता है। क्षमा शांतिदायिनी है। क्षमा से अहिंसा को नवजीवन मिलता है। अहिंसा का नामांतर क्षमा है। 'क्षमा' शब्द में जो 'क्ष' अक्षर है, उसमें ग्रंथि (गांठ) लगी हुई है। संस्कृत में 'मा' शब्द का

अर्थ निषेध है। मन में 'क्ष' के समान घुंडी मत रखो- यही 'क्षमा' का संदेश है। क्षमा का अर्थ दुर्बलता नहीं, वीरता है। दुर्बल की 'सहिष्णुता' को 'कायरता' कहते हैं तथा वीर की सहनशीलता को 'क्षमा'। क्षमा जीवन है। जीवन जीने की निर्दोष प्रक्रिया है। क्षमा दुर्घटनाओं से बचाती है। वह सबको मार्ग देती है।

यद्यपि लोग इसे जैन-समाज का पर्व कहते-समझते हैं; पर वस्तुत: सूर्य-चन्द्र आदि के समान क्षमा भी एक अत्यन्त सार्वजनिक वस्तु है। वह किसी व्यक्ति, समाज या जाति-विशेष की अपनी बपौती नहीं हो सकती।

क्रोध सदा सर्वत्र सभी के लिए अहितकारी है और क्षमा सदा सर्वत्र सभी के लिए हितकारी है, अत: क्षमावाणी पर्व को व्यक्ति, जाति, देश, काल आदि की किसी सीमा में भी नहीं बाँधा जा सकता।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जहाँ हम क्रोध की भयंकरता के परिणाम प्रतिदिन देख और भोग रहे हैं, यह क्षमावाणी पर्व अपनी और अधिक उपयोगिता को रेखांकित कर रहा है। आगामी माह में इस देश में अहिंसा की शक्ति से आजादी दिलाने वाले पूज्य बापू का जन्म दिवस 2 अक्टूबर को है जो अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस भी है, हम भी इस दिवस पर अपनी अहिंसा का प्रसार करेंगे।

देश का विश्वस्तरीय आयोजन भगवान बाहुबलीजी का महामस्तकाभिषेक समारोह फरवरी 2018 में होना तय है । यह आयोजन हमारा कुंभ है, इस कार्य हेतु हमारे पूज्य भट्टारक स्वामी चारुकीर्तिजी एक-एक तैयारियों को पूर्ण करने में लगे हुए हैं, महोत्सव की अध्यक्षा होने के नाते मुझे भी इन कार्यों में अपना सहयोग करने का पुण्य अवसर प्राप्त हुआ है, आप सभी इस पुनीत महान कार्य से अपने आप को जोड़ें और महामस्तकाभिषेक का पुण्य अर्जित कर हमारी पीढी को दिखायें कि कितना सौभाग्यशाली अवसर है जहां संपूर्ण देश सिर्फ एक ही रंग का नजर आता है वह है दिगम्बरत्व का रंग और चारों ओर जैन संस्कृति की ध्वजा दिखाई देती है। आइये जैन समाज का बच्चा-बच्चा इस विश्व की महान धरोहर हमारी पहचान के प्रति नत मस्तक हो व अपनी श्रद्धा का कलश समर्पित करें ऐसी भावना हम सभी की बनें हम यही कामना करते हैं ।

बंधुओं श्री सम्मेदशिखर जी एवं श्री गिरनारजी "स्वामित्व" एवं "व्यवस्थापन" का यह अहिंसक संघर्ष अब निर्णायक दौर में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष सूचीबद्ध हो चुका है। श्री सम्मेद शिखरजी के इस विवाद को हमारे पक्ष की ओर से सशक्तता के साथ प्रस्तुत करने हेतु भारतवर्ष के वरिष्ठ विधिवेत्ताओं की सेवा ली जा रही है।

हम पर हुए अन्याय के खिलाफ, हमारी रक्षा के लिए करोड़ों रुपये न्यायालय में खर्च हो चुके हैं और हो रहे हैं। आप सभी से निवेदन है कि अपनी धरोहर को बचाने के लिये तन-मन-धन से इस पवित्र कार्य में सहयोग करें व वीर प्रभु से प्रार्थना करें कि हमें इनमें सफलता हासिल हो। इन्हीं भावनाओं के साथ...

खम्मामि सव्वं जीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु में ।
मित्ति में सव्व भूदेसू, बेरं मज्झं ण केणवि ।।

क्षमाप्रार्थी
आपकी

Sarita Jain

- सरिता एम.के.जैन

जैनत्व की रक्षा का महापर्व–श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक

-डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

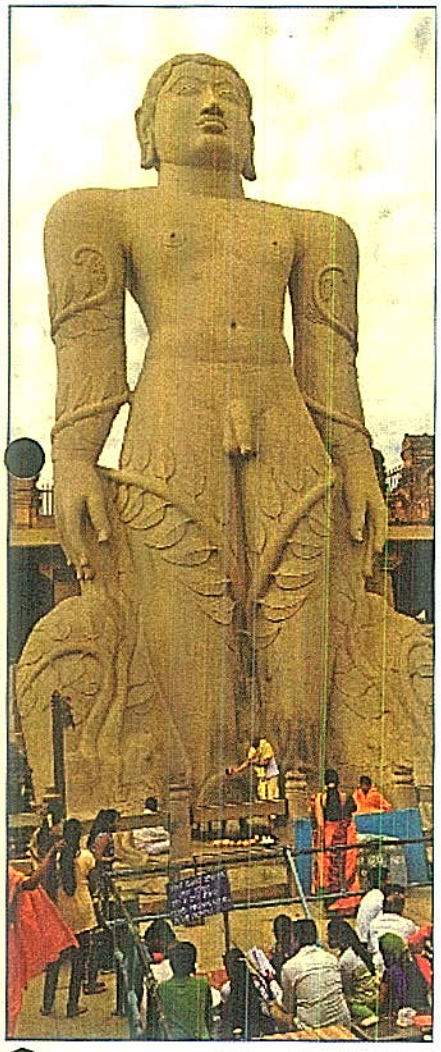

गत अंक में हमने इस पृष्ठ पर विशाल मूर्ति निर्माण परम्परा एवं महामस्तकाभिषेक की प्रशस्त परम्परा के बारे में चर्चा की। आज हम महामस्तकाभिषेक के एक भिन्न पक्ष पर चर्चा करना चाहेंगे। महामस्तकाभिषेक तीर्थंकरों की पूजन, भक्ति एवं इस पवित्र क्षेत्र के जीर्णोद्धार, विकास एवं प्रचार–प्रसार का एक अवसर तो है ही। साथ ही यह जैनत्व की रक्षा का भी पर्व है, जो 12 वर्ष बाद आता है। सम्पूर्ण भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी निवास करने वाले जैन बंधु महामस्तकाभिषेक की उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करते हैं। इस अवसर पर स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामी जी द्वारा सम्प्रति SDJMI कमेटी द्वारा जैनत्व की रक्षा हेतु :–

1. श्रवणबेलगोला के समीपवर्ती अंचल के दिगम्बर जैन मंदिरों का जीर्णोद्धार एवं विकास कार्य किया जाता है।

2. प्राचीन जैन इतिहास एवं पुरातत्त्व का परिचय कराने वाला साहित्य स्वयं या अन्य संस्थाओं को प्रेरणा देकर प्रकाशित कराया जाता है।

3. उत्तर भारत में जैनत्व के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से होने वाले नवीन अनुसंधान कार्यों, प्रकाशनों आदि का दक्षिण भारत की प्रतिनिधि भाषा कन्नड़ में अनूदित कराकर प्रकाशित किया जाता है।

4. महामस्तकाभिषेक में श्रवणबेलगोला पहुँचने वाले लाखों श्रद्धालुओं में से बड़ी संख्या में श्रद्धालु दक्षिण भारत के न्यूनतम 2–4 तीर्थों की वंदना करने अवश्य जाते हैं। जिससे उन तीर्थों की आय में वृद्धि से वहाँ के विकास कार्यों को गति मिलती है तथा हमारी प्राचीन संस्कृति की मधुर यादें लेकर जब वह श्रद्धालु वापस अपने निवास पर जाता है तो इससे जैनत्व के प्रति श्रद्धा दृढ़ होती है।

5. पूज्य स्वामी जी की पहल एवं प्रेरणा से दिगम्बर जैन समाज के विभिन्न वर्गों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु महामस्तकाभिषेक महोत्सव की पूर्व बेला में मुख्यतः निम्नांकित सम्मेलन आयोजित किये जा चुके हैं :–

1. कन्नड़ भाषा एवं साहित्य सम्मेलन
2. संस्कृत साहित्य सम्मेलन
3. जैन महिला सम्मेलन

निकट भविष्य में निम्न सम्मेलन प्रस्तावित हैं :–

1. अ. भा. दि. जैन विद्वत् सम्मेलन (1–5 अक्टूबर 17)
2. जैन युवा सम्मेलन (28–29 अक्टूबर 17)
3. प्राकृत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (3–6 नवम्बर 17)
4. जैन पत्रकार सम्मेलन

संभव है कि कुछ अन्य सम्मेलन भी आयोजित किये जा चुके हो या भविष्य में हो। इस सम्मेलन में समागत प्रतिनिधि जैन संस्कृति की विशालता एवं महत्व को आत्मसात कर संकल्पित होकर जैनत्व की रक्षा हेतु कार्य करेंगे किन्तु आज भी दक्षिण भारत की सांस्कृतिक धरोहर का हिन्दी भाषी विद्वानों को ज्ञान अल्प ही है अतः संस्कृत/प्राकृत/अपभ्रंस भाषा एवं कानड़ी लिपि में लिखी कृतियों का लिप्यांतरण प्राथमिकता के आधार पर कराया जाना चाहिए जिससे बड़े वर्ग तक इस धरोहर को पहुँचाया जा सके।

पयुर्षण पर्व सानन्द सम्पन्न हो चुके हैं अतः इस पत्रिका के माध्यम से मैं विगत एक वर्ष में हुए समस्त ज्ञात अज्ञात अपराधों, भूलों जिनसे आपको किंचित भी कष्ट हुआ हो हेतु क्षमाप्रार्थी हूँ। आशा है कि आप अपना स्नेह पूर्ववत बनायें रखते हुए पत्रिका को जैन जगत एवं जैन तीर्थों की प्रतिनिधि पत्रिका बनाने में अपना सहयोग अधिक सक्रियता से प्रदान करेंगे।

समय बहुत कम बचा है। कृपया महोत्सव की सफलता हेतु अपने–अपने स्तर पर सक्रिय होकर जैनत्व की रक्षा के इस महती अनुष्ठान में अपनी आहुति देवें।

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 8 अंक 3 सितम्बर 2017

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री हुकम जैन 'काका'	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

जैनत्व की रक्षा का महापर्व–श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक	5
श्रवणबेलगोला में उमड़ा महिलाओं का मेला	9
क्षमा करें और क्षमा मांग लें, जीत है इसमें हार नहीं	16
अन्तर्मन की कलुषित गांठों को निकालकर एक-दूसरे से क्षमा-याचना	18
प्राकृताचार्य श्री सुनीलसागरजी महाराज	19
प्रजातंत्र की समस्याओं का समाधान अनेकांत की सापेक्ष दृष्टि	20
महामस्तकाभिषेक प्रभावना रथ प्रारंभ	25
'जैनत्व की रक्षा कैसे हो?' शीर्षक संगोष्ठी सम्पन्न	26
Jain site with Bahubali image deemed protected	27
No More Grudges	28
आचार्य श्री विशुद्धसागर एवं प्रकृष्ट देशना	29
हमारे नये बने सदस्य	34

अनुरोध

भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली– श्रवणबेलगोल के आगामी महामस्तकाभिषेक 2018 के निमित्त सम्पूर्ण देश में उत्साह का वातावरण है। लाखों की संख्या में धर्मनिष्ठ श्रावक–श्राविकायें इस निमित्त आगामी 5 माहों (सितम्बर 17–फरवरी 18) में श्रवणबेलगोल महातीर्थ की यात्रा का कार्यक्रम बना रहे हैं। जैन तीर्थों के संरक्षण, संवर्द्धन, प्रचार एवं प्रसार हेतु समर्पित आपकी पत्रिका '**जैन तीर्थ वन्दना**' ने भी इस पावन अवसर पर अपने दायित्व को स्मरण करते हुए दक्षिण भारत पर विशेष सामग्री देने का निश्चय किया है। जुलाई–2017 से यह क्रम प्रारम्भ हो चुका है।

सभी पाठकों विशेषतः सुधी लेखकों/ विद्वानों से अनुरोध है कि वे दक्षिण भारत के तीर्थों से सम्बद्ध अपने आलेख, महामस्तकाभिषेक एवं श्रवणबेलगोल से सम्बद्ध यात्रा विवरण, समीक्षात्मक, सर्वेक्षणात्मक, शोधात्मक लेख या अन्य समायोजित सामग्री हमें महामस्तकाभिषेक तक नियमित रूप से भिजवायें। हम एतदर्थ आपके आभारी रहेंगे।

डॉ. अनुपम जैन

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

मिच्छामि दुक्कड़म

क्षमा स्वयं से, स्वयं को, स्वयं के लिये
दिये जाने वाला एक अनुपम उपहार है।
क्षमा स्वयं में भीतर से उपजती है।
क्षमा मजबूरी का निर्णय नहीं,
एक मजबूत और सुविचारित निर्णय है।
यह वीरों का बल है।
क्षमा हमारा मानस अभिषिक्त करती है।

पर्यूषण पर्व के पावन अवसर पर हम अपनी ओर से,
अपने परिवार की ओर से तथा
तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से
आप सभी से जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिये क्षमा याचना
तथा विश्व मैत्री दिवस के इस पुण्य अवसर पर मंगल भावना
भाते हैं कि हम सभी प्रेम और वात्सल्य की नवीन ऊर्जा के
साथ
तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन और विकास के नये युग का
स्वागत करें।

संतोष जैन पेंढारी
नागपुर
राष्ट्रीय महामंत्री

सरिता एम.के.जैन
चैन्नई
राष्ट्रीय अध्यक्षा

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

Bharatvarshiya Digamber Jain Tirthkshetra Committee

Registered under Indian Societies Act, of 1860 Bearing No. 570 of 1930
Bombay Public Trust Act, 1950 Bearing No. F/10 of 1952

।। तीर्थों का संरक्षण, संवर्धन और सम्यक विकास हमारी प्रतिबद्धता है ।।

दिनांक-30/8/2017

विनम्र निवेदन

श्री तीर्थराज सम्मेदशिखरजी हमारा शाश्वत और परम पावन पवित्र तीर्थ है। सांसारिक सुखों के त्याग से ऊपर उठकर हमारे आराध्य 20 तीर्थंकरों की यह सिद्ध भूमि है। युगों-युगों से हमारे ऋषि, मुनिराज, आचार्य भगवंतों ने इस शांत, निराकुल तपोभूमि पर सल्लेखना धारण करके मोक्ष प्राप्त किया है। यह भूमि, यह पर्वत हमारे लिए एक अनोखी निधि है। अनादिकाल से हमारे पूर्वज यहाँ आकर वंदना, पूजा, भक्ति का समर्पण अर्घ चढ़ाकर, हर्षातिरेक में भावाभिभूत हो जाते हैं। श्री तीर्थराज सम्मेदशिखरजी हमारी श्रद्धा, आस्था, भक्ति और साधना का प्रतीक है।

ऐसे परमपावन क्षेत्र का, संरक्षण करना, इसका विकास करना ही आज के युग का 'सर्वोत्कृष्ट धर्म' है। हमारे लिए यही रत्नत्रय है।

आज हमारे पुण्योदय की पराधीनता के कारण, यह परम वंदनीय क्षेत्र विवाद का रूप धारण किये हुए है। जिन हाथों ने अभिषेक के कलश उठाये, आज उन्हीं हाथों में तन-मन को संक्लेषित करनेवाले उपकरण उठाने का समय आया है। हम सभी चाहते हैं कि, सांसारिक जय-पराजय की अपेक्षा हमारा यह क्षेत्र दीर्घकाल तक 'क्षमा निदान' का रूप लेकर जीवित रहे।

मान्यवर, गत 125 वर्षों से अधिक, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, समूचे दिगम्बरत्व का प्रतिनिधित्व करते हुये, जैन श्वेताम्बर सोसायटी एवं सेठ आनंदजी कल्याणजी पेढी एवं अन्यों से, अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्षरत है।

'स्वामित्व' एवं 'व्यवस्थापन' का यह अहिंसक संघर्ष अब निर्णायक दौर में, माननीय सर्वोच्च न्यायालय के सम्मुख सूचीबद्ध हो चुका है।

इसका प्रथम चरण 22 अगस्त 2017 को शुरु हुआ, केस की सुनवाई भी हुई और पार्टियों के अनुरोध पर केस 8 हफ्तों के लिए मुल्तवी हुआ है। इसके बाद केस प्रति दिन चलेगा। श्री सम्मेद शिखरजी के इस विवाद को हमारे पक्ष की ओर से सशक्तता के साथ प्रस्तुत करने हेतु भारतवर्ष के वरिष्ठ विधिवेत्ताओं की सेवा ली जा रही है।

हम पर हुए अन्याय के खिलाफ, हमारी रक्षा के लिए करोड़ों रुपये न्यायालय में खर्च हो चुके हैं और हो रहे हैं।

इसलिए अब वक्त आ गया है, अपनी भक्ति, आस्था को समर्पित करने का, हम अपनी भक्ति को तन-मन-धन से इतना सशक्त करें, समर्पित करें कि हमारे आराध्य संरक्षित होवें।

हम आपसे विनम्रपूर्वक निवेदन करते हैं कि, हम सभी जागृत होकर, निर्मोही बनकर, निस्वार्थ भावसे एक जुट होकर अपने आराध्य के चरणों पर कर्तव्य का दानरूपी पुष्प चढायें।

आदर सहित,

संतोष जैन पेंढारी	शिखरचंद पहाड़िया	सरिता एम.के.जैन
(राष्ट्रीय महामंत्री)	(कोषाध्यक्ष)	(राष्ट्रीय अध्यक्षा)
09822225911	09821064071	09841018370

एवं

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी पदाधिकारीगण

कृपया दान राशि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नाम से
बैंक ऑफ बडौदा, वी.पी.रोड ब्रांच मुम्बई-4, के सेविंग खाता नं.13100100008770, IFSC : BARBOVPROAD
बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टँक ब्रांच मुम्बई-4 के सेविंग खाता नं. 001210100017881, IFSC : BKID0000012
में जमाकराकर हमें सूचित करने की कृपा करे।

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक – 2018

संस्कृति संरक्षण के संकल्प के साथ राष्ट्रीय महिला सम्मेलन सम्पन्न

श्रवणबेलगोला में उमड़ा महिलाओं का मेला

श्रवणबेलगोला गोम्मटनगर। गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक 7 से 25 फरवरी 2018 के पूर्व आयोजित विभिन्न सम्मेलनों के आयोजन के दौरान राष्ट्रीय जैन महिला सम्मेलन का सफल व सर्वमान्य आयोजन 11 से 13 अगस्त 2017 को पट्ट महादेवी शान्तला सभा मण्डप गोम्मट नगर में पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के नेतृत्व व महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन (चैन्नई) व महिला सम्मेलन स्वागत समिति अध्यक्ष श्रीमती शीला अनन्तराज (मैसूरु) की कुशल संगठनात्मक क्षमता के साथ संपन्न हुआ ।

'संस्कृति का संरक्षण हमारा कर्तव्य' के ध्येय वाक्य को लेकर हुए सम्मेलन में अनेक विदुषी बहनों ने विभिन्न विषयों पर अपने आलेखों को प्रस्तुत किया । पूज्य आर्यिका माताजी ने मार्गदर्शन दिया तो प्रमुख महिला रत्नों को आदर्श महिला प्रशस्ति के साथ देश सेवा, कला, संस्कृति, समाजसेवा, साहित्य, प्रशासन, चित्रकला, हस्तशिल्प, शास्त्रीय संगीत, लोकगान, खेल, नृत्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठित महिलाओं व राष्ट्रीय जैन महिला संस्थाओं को गौरव पुरस्कार प्रदान कर अत्यंत भव्य व शानदार तरीके से सम्मानित किया गया ।

जैन संस्कृति के सबसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय आयोजन के पूर्व यह आयोजन सामाजिकता के क्षेत्र में महिला कल्याण को बढ़ावा देने वाला अभूतपूर्व व अविस्मरणीय, अद्भूत आयोजन था जिसमें देशभर की श्रेष्ठ व ज्येष्ठ महिला रत्नों ने भाग लेकर आयोजन की सार्थकता को प्रमाणित किया ।

भव्य शोभायात्रा ने सबका मन जीत लिया

अभूतपूर्व उत्साह से भरी देश की महिलाएं जब 11 अगस्त को प्रातः 8 बजे से चावुण्डराय मण्डप में एकत्रित होना प्रारंभ हुई । पीले, नीले, लाल सप्तरंगी रंगों में अपनी–अपनी संगठनात्मक वेशभूषा के साथ अपने–अपने बेण्डों व विशेष वेशभूषा में मानों मठ में महिलाओं का मेला लग गया । पूज्य भट्टारक स्वामीजी के सान्निध्य में मंगल कलश स्थापना, अभिषेक पूजा संपन्न हुई और शोभायात्रा का प्रारंभ हुआ । उपस्थिति इतनी कि एक छोर चन्द्रगिरि पर्वत पर तो दूसरा चावुण्डराय मण्डप पर । 20 तरह के बैण्ड बाजे व भक्ति में झूमती बहनों ने जो आगाज किया उससे पूज्य भट्टारक स्वामी जी के चेहरे की मुस्कुराहट सबको सफलता के लिए प्रेरित कर रही थी।

महिला नेत्री विराजी भव्य रथ पर

रजत कांति की आभा लिए हुए सप्त अश्व सहित रथ पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन महिला नेत्री श्रीमती सुधा मलैया (भोपाल), अतिथि श्रीमती रत्नप्रभा सेठी (गुवाहाटी), श्रीमती शीला अनंतराज (मैसूर) को ससम्मान बैठाया गया और आगे–आगे मंगल कलश लिए यह रथ ऐसा लग रहा था कि

श्रवणबेलगोला में आयोजित महिला सम्मेलन की झलकियां

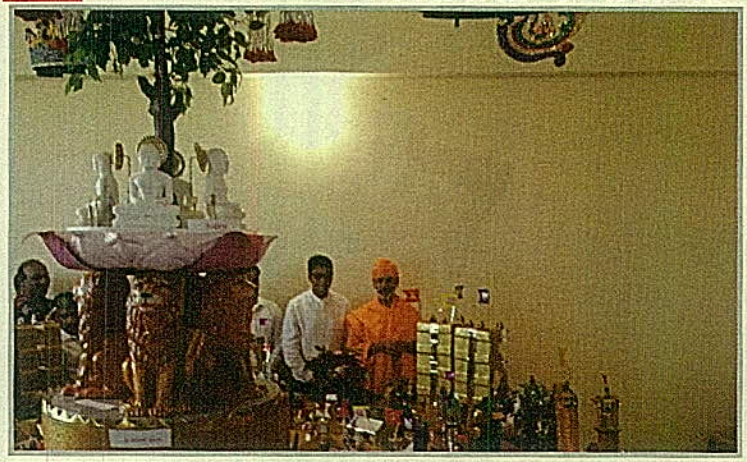

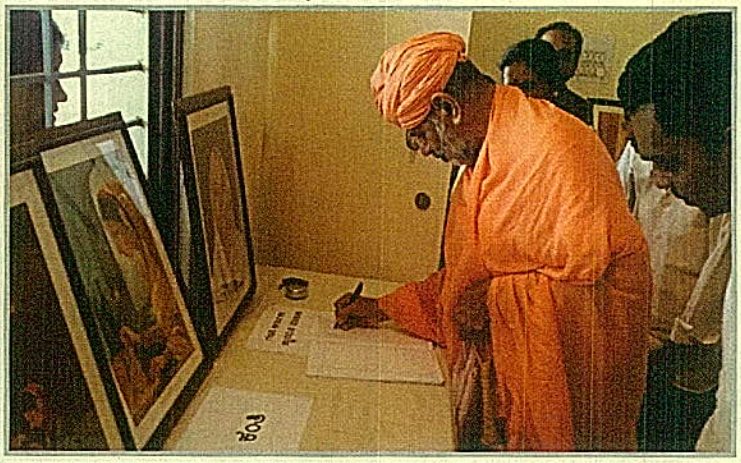

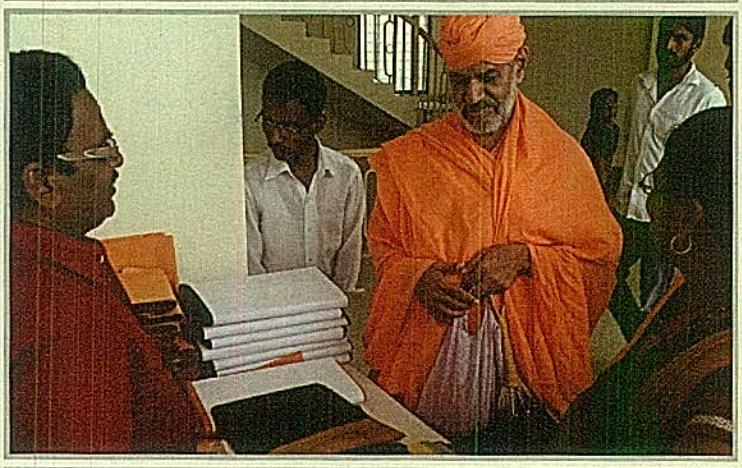

देशभर की इन राष्ट्रीय महिला नेत्रियों को बिठाकर देश की महिलाएँ रथ खींच रही है । विभिन्न नृत्य व अनुशासित होकर धर्मनिष्ठ महिलाओं ने लगभग तीन किमी का जुलुस पूर्ण किया और बाहुबली इंजीनियरिंग कॉलेज स्थित गोम्मट नगर में पहुंची।

बाहुबलीजी के कारण दुनिया की नजर कर्नाटक पर – उमाश्री

पट्ट महादेवी शान्तला सभा मण्डप में सम्मेलन का उद्घाटन समारोह में सबके आराध्य गोम्मट स्वामी की स्तुति सोम्या सर्वेश जैन (श्रवणबेलगोला) ने प्रस्तुत की । कुष्माडिनी दिगम्बर जैन महिला समाज श्रवणबेलगोला द्वारा सुमधुर प्रार्थना प्रस्तुत की । सम्मेलन स्वागत समिति की अध्यक्ष शीला अनंतराज (मैसूरु) ने स्वागत भाषण देते हुए सभी का परिचय कराया ।

कर्नाटक सरकार में कन्नड़ तथा सांस्कृतिक महिला एवं बाल विकास विभाग के कैबिनेट मंत्री श्रीमती उमाश्री ने अपने धारा प्रवाह उद्बोधन से सभी का मन जीत लिया । श्रीमती उमाश्री ने कहा कि श्रवणबेलगोला स्थित भगवान बाहुबली स्वामी हम सबके आराध्य है, पूजनीय है, महामस्तकाभिषेक के कारण पूरी दुनिया की नजर हमारे ऊपर है, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ने सर्वप्रथम अपनी पुत्रियों को शिक्षण देकर महिलाओं का स्थान उच्च दिया व गौरव बढ़ाया था । कन्नड़ साहित्य और संवर्धन में जैन महिलाओं का बहुमूल्य योगदान है । उन्होंने कर्नाटक की महिला रत्न अत्तिमब्बे, शान्तला देवी, चेन्नम्माजी सहित अनेक महिलाओं के योगदान को रेखांकित किया । महिला अबला नहीं सबला है, असमर्थ नहीं समर्थ है । महिलाओं को धैर्य न खोने व सदैव प्रयत्नशील रहने का आह्वान करते हुए उन्होंने श्रवणबेलगोला व कर्नाटक के विकास में पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी की सहृदयता व महिलाओं के सम्मान की भावना को उल्लेखित करते हुए कर्नाटक सरकार की ओर से हर संभव मदद हेतु आश्वस्त किया।

मातृत्व शक्ति को जागृत करना ही सम्मेलन का उद्देश्य – पूज्य भट्टारक स्वामीजी

परम् पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी ने कहा कि लोक पूज्य भगवान बाहुबली स्वामीजी की प्रतिमा के निर्माण के पीछे चावुण्डरायजी की माँ की इच्छा ही थी । अभिषेक की पूर्णता के पीछे भी गुल्लिका अज्जी का ही नाम है, मातृशक्ति को हम नमन करते है, महिलाओं की मातृत्व शक्ति को जागृत करना ही हमारा उद्देश्य रहता है । सभी जगह से महिला सदस्यों का सहयोग हमें मिलता है । मातृशक्ति विश्व के मार्गदर्शक के रुप में आगे बढ़े व संस्कृति का संरक्षण करती रहे यहीं भावना है ।

दया–करुणा का भाव हर एक में होना आवश्यक – हेमावती वी.हेग्गड़े

उद्घाटन समारोह की सम्मेलनाध्यक्ष मातृश्री हेमावती वी.हेग्गड़ेजी (श्री क्षेत्र धर्मस्थल) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमें अहिंसा के साथ पर्यावरण की रक्षा, वृक्षारोपण, पानी का संरक्षण आदि कार्यों में भी हाथ बटाना है । अरिहंत देव, निर्ग्रंथ गुरु दया ही धर्म है । दया करुणा का भाव हर एक में होना जरुरी है, यह कार्य महिलाएं बहुत अच्छे से कर सकती है । उन्होंने 1940 में सम्मेलन की अध्यक्ष रही श्रीमती यम्माजी के भाषण का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने कहा था कि "मनुष्य समाज की अभिवृद्धि कार्य में सिर्फ पुरुषों का योगदान नहीं अपितु स्त्रियों का भी समान जिम्मेदारियाँ है, जिसे कोई भी टाल नहीं सकता । शरीर एवं स्वभाव में स्त्री–पुरुष भिन्न हो सकते है, लेकिन ज्ञान एवं बुद्धि की अपेक्षा दोनों समान है । भगवान बाहुबली की स्थापना में कारणभूत कालला देवी व गुल्लिका अज्जी का उल्लेख करते हुए पूज्य भट्टारक स्वामीजी की उत्कृष्ट भावना की सराहना की व कहा कि स्वामीजी सभी वर्गों व सभी धर्मों में आदर के पात्र है सभी का हित चाहने वाले है, ज्ञान के भण्डार है जिन्होंने धवलत्रय ग्रंथों के अनुवाद करने के लिए वाहन का त्याग कर इस कार्य को पूर्ण किया था, ऐतिहासिक कार्य के लिए कन्नड़ सारस्वत लोक सहित समस्त भारतवर्ष के विद्वान पूज्य स्वामीजी के ऋणी है । आपने–अपने भाषण में अनेक संस्मरणों का उल्लेख भी किया व सभी से महिला सम्मेलन व महामस्तकाभिषेक को सफल बनाने की अपील भी की ।

महिलाएं चाहे तो सब कुछ कर सकती है – सरिता एम.के. जैन

सम्मेलन का प्रस्ताविक वक्तव्य देते हुए महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन (चैन्नई) ने कहा कि माँ के संकल्प के कारण पुत्र ने भगवान बाहुबलीजी की यह विशाल प्रतिमा बनवाई, यह बताती है कि महिला का संकल्प कितना दृढ़निश्चयी होता है । महामस्तकाभिषेक की पूर्णता भी माँ गुल्लिका अज्जी के साथ जुड़ी है । महिला सम्मेलन के अवसर पर उन्होंने महिलाओं को स्वावलंबन व उद्यौगिक क्षेत्र में आगे आने की अपील की । सम्मेलन के ध्येय वाक्य "संस्कृति का संरक्षण हम सबका कर्तव्य" विषय पर कहा कि माँ–महिला–ममता ही संस्कृति की आधार है, ममता से वह हर कार्य करा सकती है जो असंभव है, माँ की ममता बच्चे की उन्नति

व अवनति दोनों कर सकती है माँ घर की प्रथम पाठशाला है यदि वह संस्कारों का पाठ पढ़ा दे तो राष्ट्र, परिवार, समाज की उन्नति को कोई रोक नहीं सकता । मानवीय मूल्यों की स्थापना में महिलाओं के योगदान व पूज्य भट्टारक स्वामीजी को "कर्मयोगी " की उपाधि पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा प्रदान किये जाने का उल्लेख किया ।

इस अवसर पर मंच पर माँ मरुदेवी के विग्रह का अनावरण मंचासीन अतिथियों द्वारा अत्यंत भव्यता के साथ किया गया । स्मारिका ग्रंथ 'माधवी' प्ट का लोकार्पण भी किया । मंच पर सम्मेलन अध्यक्ष मातृश्री हेमावती वी.हेग्गड़े मुख्य अतिथि श्रीमती उमाश्री (मंत्री – कर्नाटक सरकार), श्रीमती तारा ए.मंजू (हासन), महिला नेत्री श्रीमती सुधा मलैया (भोपाल), जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती श्वेता देवराज (हासन), जिला पंचायत सदस्य श्रीमती ममता रमेश (श्रवणबेलगोला), जनपद पंचायत सदस्य श्रीमती महालक्ष्मी शिवराज (चनरायपट्टन), श्रीमती कुसुमा सी.एन.बालकृष्ण (चनरायपट्टन), श्रीमती जे.आर.गीता एम.ए.गोपालस्वामी (चनरायपट्टन), ग्राम पंचायत अध्यक्ष श्रीमती हेमाप्रभाकर (श्रवणबेलगोला), छत्तीसगढ़ निःशक्तजन वित्त एवं विकास निगम रायपुर अध्यक्ष श्रीमती सरला रत्नेश जैन, वरिष्ठ समाजसेविका श्रीमती रत्नप्रभा सेठी (गुवाहाटी), श्रीमती सरिता एम.के.जैन, श्रीमती शीला अनंतराज के साथ विशेष रुप से महिला सम्मेलन प्रभारी श्री विनोद डोडण्णवार (बेलगांव), जनरल सेक्रेटरी श्री सतीश जैन (एससीजे), श्री सुरेन्द्र डी.हेग्गड़े (धर्मस्थल), कार्याध्यक्ष एस.जितेन्द्रकुमार (बेंगलुरु), सेक्रेटरी श्री सुरेश पाटिल (सांगली), श्री जयकुमार जैन (कोटा), विधायक श्री बालकृष्णजी मंचासीन थे । संचालन स्वागत समिति संयोजक श्रीमती डॉ.संगीता विनायका (इन्दौर) व प्रधान कार्यदर्शी श्रीमती लता सुदर्शन (मैसूरु) ने किया । आभार श्रीमती कल्पना उदयकुमार (श्रवणबेलगोला) ने व्यक्त किया ।

11 सत्रों में 40 विदूषी बहनों ने पढ़े शोधालेख

दिनांक 11–12–13 अगस्त को महिला संगोष्ठी का आयोजन भी हुआ जिसमें देश की चुनी हुई प्रख्यात विदुषी बहनों ने इतिहास, संस्कृति, मानवीय मूल्यों के विकास, प्रशासन, राष्ट्र निर्माण, धर्म एवं साहित्य, महिला उद्यम, विज्ञान एवं तंत्र ज्ञान, आहार पद्धति आदि में महिलाओं के योगदान विषय में अपने आलेख पीपीटी के माध्यम से चार सेमीनार हॉल में प्रस्तुत किये । विभिनन सत्रों की अध्यक्षता श्रीमती रत्नप्रभा सेठी (गुवाहाटी), डॉ.प्रीति शुभचन्द्र (मैसूरु), डॉ.प्रभाकिरण जैन (दिल्ली), कोमला ब्रह्मदेवय्या (बैंगलोर), श्रीमती अनिता सुरेन्द्र (बैंगलूरु), ब्र. समता दीदी, श्रीमती सुनीता जैन (दिल्ली), प्रो.अंजू जैन (दिल्ली) ने की । आलेख वाचन विदुषी बहन सर्वश्री डॉ. संगीता मेहता (इन्दौर), डॉ.रश्मि कोठारी (जयपुर), डॉ.लता सिंघई (अमरावती), डॉ.विभा जैन (दिल्ली), श्रीमती सुषमा जैन भिलाई, डॉ.पद्मिनी नागराज (बैंगलूरु), श्रीमती उषा पाटनी, श्रीमती प्रियकारिणी (कार्कल), श्रीमती नम्रता सोनी (अजमेर), डॉ. प्रगति जैन (इन्दौर), एड. श्रीमती एम.सी.नागश्री (बैंगलूरु), एड. श्रीमती सुधा जैन (दिल्ली), डॉ.मनीषा जैन (निम्बाहेड़ा), श्रीमती कुसुम पाण्डया (इन्दौर), डॉ.ब्र.सविता जैन (शीतल तीर्थ, रतलाम), श्रीमती श्वेता जैन (मुडबद्री), डॉ.नीरजा नागेन्द्र (बैंगलूरु), श्रीमती प्रतिष्ठा जैन (हरदा), श्रीमती रजनी जैन (दिल्ली), डॉ.सी.पी.कुसुमा (श्रवणबेलगोला), डॉ.सविता जैन (दमोह), श्री निर्मला जैन (दिल्ली), श्रीमती रेखा जैन (बैंगलूरु), डॉ.सुषमा रोटे (कोल्हापुर), डॉ.ज्योत्सना जैन (दिल्ली), श्रीमती वीणा शरद जैन (खण्डवा), डॉ.भारती जैन (दिल्ली), डॉ.सुजाता शास्त्री (सोलापुर), डॉ.गुडिबण्डे पूर्णिमा (बैंगलूरु), डॉ.ममता जैन (पुणे), श्रीमती अनुपमा राजेन्द्र जैन (सनावद), बा.ब्र.सिद्धा दीदी (संघस्थ आ.वर्धमानसागर), डॉ.ज्योति जैन (खतौली), डॉ.ऋचा जैन (नागपुर) ने किये ।

विभिन्न सत्रों का संचालन सर्वश्री श्रीमती माधवी शाह (ग्वालियर), श्रीमती निशा जैन (दिल्ली), श्रीमती सुनिता जैन (इन्दौर), श्रीमती पद्मश्री चन्द्रकांत (बैंगलूरु), श्रीमती अर्चना सचिन (श्रवणबेलगोला), श्रीमती कविता राजेश (श्रवणबेलगोला), श्रीमती अरुणा शिरगुप्पी (हुबली), श्रीमती पद्मश्री गिरिश (श्रवणबेलगोला), श्री इंदिरा जयकुमार (श्रवणबेलगोला), ब्र.जलजा जैन (कुमकुरु), श्रीमती तिलका नवीन (श्रवणबेलगोला) ने किया । मुख्य सभा मण्डप में संचालन का दायित्व डॉ.संगीता विनायका (इन्दौर), श्रीमती लता सुदर्शन (मैसूरु) ने निभाया ।

40 प्रशस्ति पुरस्कार व 9 संस्थाओं को किया सम्मानित

राष्ट्रीय जैन महिला सम्मेलन की शानदार व सकारात्मक परम्परा के तहत पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी के नेतृत्व में 12 महिलाओं को आदर्श महिला प्रशस्ति पुरस्कार प्रदान किये गए जिनमें सर्वप्रथम पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच.डी.देवेगोड़ा की धर्मपत्नी श्रीमती चेन्नम्मा एच.डी.देवेगोड़ा (हासन) को उनकी उत्कृष्ट समाजसेवा हेतु पुरस्कृत किया गया । डॉ.कमला हम्पन्ना (बैंगलूरु), डॉ.पद्म शेखर (बैंगलूरु), डॉ.विजयलक्ष्मी बालेकुन्द्री (बेलगांवी), श्रीमती रमाकुमारी डॉ.सिद्धलिंगय्या (बैंगलूरु), डॉ.तबासम भानु

श्रवणबेलगोला में आयोजित महिला सम्मेलन की झलकियां

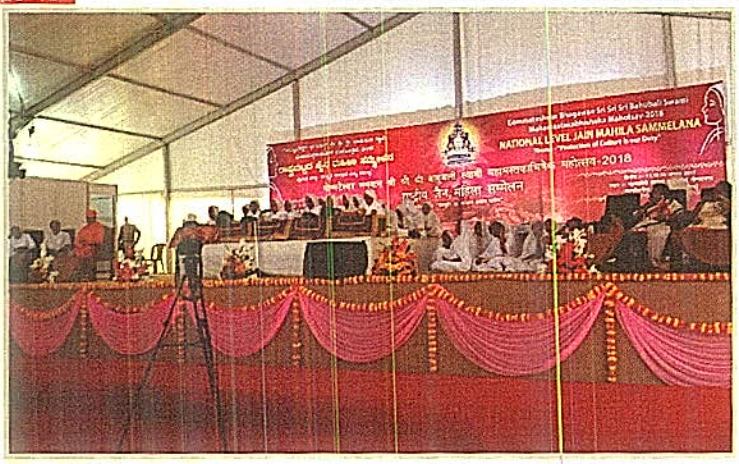

(बैंगलूरु), श्री कृस्टल नोवेल (बैंगलूरु), श्रीमती लीलावती (हासन), श्रीमती अम्बले राजेश्वरी (हासन) व श्री सालुमरद तिम्मक्क (बैंगलूरु) को भी आदर्श महिला प्रशस्ति प्रदान की गई।

विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट महिलाओं का सम्मान

देश, सेना, समाज, प्रशासन, साहित्य, नृत्य, क्रीड़ा आदि विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिला रत्नों को आदर्श जैन महिला प्रशस्ति प्रदान की गई । 13 अगस्त को हुए साधक सम्मान समारोह में हासन जिला कलेक्टर श्रीमती रोहणी सिंधूरी दासरी (आई.ए.एस.) के मुख्यातिथ्य में संपन्न हुआ । मंच पर पूज्य स्वामीजी के साथ नाडोजा डॉ.कमला हम्पना (बैंगलूरु), श्री सुरेन्द्र हेंग्गड़े, श्रीमती सरिता दीदी चेन्नई, श्रीमती शीला अनंतराज, श्रीमती अनिता सुरेन्द्र हेंग्गड़े (धर्मस्थल) आदि उपस्थित थे ।

देश रक्षण हेतु सर्वप्रथम मेजर नीलम गौरवाडे (भारतीय सेना सांगली) को, प्रशासनिक क्षेत्र में आई.ए.एस. जयश्री कियावत (भोपाल), श्रीमती नेहा जैन (दिल्ली) , श्रीमती नीला मंजूनाथ कर्नाटक (बैंगलूरु) व आई.पी.एस. सुरेखा दुग्गे (मुंबई) व समाजसेवा हेतु फिक्की की चैयरमेन श्रीमती नीता बुचरा (दिल्ली), श्रीमती मैनादेवी सेठी (बैंगलुरु), श्रीमती इन्दुमती कल्लापण्णा अवाडे, इचलकंरजी (महा.), श्रीमती स्वरुपा आर. यड्रांवकर (महा.), श्री शांता सन्मतिकुमार (कर्नाटक), श्री विजयकुमारी मुरारप्पा (हासन), श्रीमती नागरत्न रामगोंडा (बेलगॉवि), श्रीमती पुष्पा पाटिल (एनापुर बेलगॉवि), श्रीमती सुलभा मगदुम इचलकरंजी व साहित्य सेवा हेतु लेखक पद्मश्री सुनीता जैन (दिल्ली), ब्राह्मीलिपि हेतु डॉ.मुन्नी जैन (वाराणसी), श्रीमती शान्तम्मा धारणीदेवी (श्रवणबेलगोला) को सम्मानित किया गया ।

श्रीमती शशि प्रभा जैन (दिल्ली) को शिक्षा, श्रीमती नवरत्न इन्दुकुमार चिक्कमंगलूरु को चित्रकला, हस्तशिल्प, श्रीमती विलासकुमारी शर्मा मैसूरु को शास्त्रीय संगीत, श्रीमती भारती छब्बी (शिग्गांव हावेरि) को लोकगीत, श्रीमती करुणा जैन (बेंगलूरु) को क्रिकेट खेल हेतु व नाट्यमयूरी, अनुषा जैन (पुत्तरु) को नृत्य में श्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु सम्मानित किया गया । संचालन श्रीमती लता सुदर्शन, श्रीमती कुमुदा नागभूषण (मैसूरु), श्रीमती इन्द्रा बड़जात्या (जयपुर) व डॉ.संगीता विनायका (इन्दौर) ने किया । डॉ.सरयू दोषी (मुंबई), श्रीमती अंशिका जैन (आईएएस – अंबाला), श्रीमती सुशीला देवी पाटनी (किशनगढ़), श्रीमती विमला सुमतिकुमार (बैंगलूरु) का चयन भी महिला प्रशस्ति के लिए किया गया ।

राष्ट्रीय जैन महिला संस्थाओं को गौरव पुरस्कार

महिला शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली जैन महिला संस्थाओं को गौरव पुरस्कार प्रदान किये गए जिनमें एक लाख रुपये व प्रशस्ति प्रदान की गई । सर्वप्रथम प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ जबलपुर (म.प्र.) व अत्तिमब्बे विद्यामंदिर ट्रस्ट तुमकुरु (कर्नाटक) वीर महिला मंडल सांगली (महाराष्ट्र), पंचाक्षरि महिला समाज वेनाड़ (केरला), श्री दि.जैन महिला आश्रम सागर (म.प्र.), बाहुबली श्रावक आश्रम दानशाला (कार्कल), पद्मावती दि.जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय (जयपुर), श्री क्षेत्र सिद्धांत तीर्थ संस्थान नंदनवन धरियावद प्रतापगढ़ (राजस्थान), ज्वालामालिनी बालिका उच्च विद्यालय (नरसिंग राजपूर) सहित नौ संस्थाओं को पुरस्कृत किया गया ।

अभूतपूर्व थी सम्मानित करने की प्रक्रिया

भव्य पट्ट महादेवी शान्तला सभा मण्डप के विशाल सुसज्जित पंच पर जब सम्मानित करने बुलाया गया जो बहुत ही सम्मानजनक था । सम्मानित महिला रत्न को नीचे से बेण्ड बाजे के साथ मंच तक लाया गया । वहां पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता जैन व श्रीमती शीला अनंतराज ने उनका वेलकम कर उन्हें सुसज्जित सिंहासन पर बैठाया फिर उन्हें विधिवत रुप से प्रशस्ति प्रदान की गई । पूज्य स्वामीजी ने सभी को अपनी ओर से स्मृति चिन्ह प्रदान किये व सभी को स्वर्ण पदक भी प्रदान किए गए । अभूतपूर्व आयोजन में सम्मानित होने पर महिला रत्न अत्यंत प्रसन्न चित्त थी । स्वागत समिति संयोजक डॉ.संगीता विनायका के हिन्दी संचालन में प्रशस्ति वाचन का कार्य रजनी जैन, अनुपमा जैन, इन्द्रा बड़जात्या, भारती जैन, डॉ.अल्पना जै सुधा जैन, अंजू जैन, विभा जैन आदि ने प्रशस्ति वाचन किया ।

संस्कारों की संवाहिका है नारी – आचार्य वर्धमानसागर

चावुण्डराय मण्डप में हुए गुरुवंदना कार्यक्रम में समस्त प्रतिभागियों ने श्रवणबेलगोला में चातुर्मासरत आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज सहित समस्त आचार्य–मुनि–आर्यिका संघों की वंदना की। आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ने दानचिंतामणि अत्तिमब्बा अब्बे का उल्लेख करते हुए कहा कि महिलाएं किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है, यहॉ उपस्थित विशाल जन समूह बता रहा है कि महिलाओं ने बहुत त्याग किया है । आज संस्कृति में यदि संस्कार है तो उनकी संवाहिका नारी ही है। वह धर्म संरक्षण, परिवार, समाज, राष्ट्र सभी को संभालते हुए

बच्चों को संस्कारित भी करती है । वह कुम्भकार की भांति बच्चे को जैसा घड़ना चाहे घड़ सकती है । प्रज्ञाश्रमण मुनिश्री अमितसागरजी ने कहा कि वह हीरे के समान होती है उस पर एक भी स्क्रेच लगे तो उसकी कीमत नहीं होती इसलिए उसे संयमित होना होता है । संस्कृति, संस्कारों से ही सुरक्षित होती है। जितने भी प्रमुख कार्य है सबमें महिलाओं को ही महत्व दिया गया है । सभी त्यागी वृंदों की चरण वंदना कर समस्त महिला प्रतिभागियों ने आशीर्वाद प्राप्त किया ।

संस्कृति बचाने में महिलाओं की भूमिका अग्रणी – आर्यिका माताजी

दशम सत्र में पूज्य आर्यिका माताजी व अतिथि विदुषी डॉ.सुधा मलैया (भोपाल), श्रीमती सरला रत्नेश जैन (छत्तीसगढ़) अपना अनुभवी सारगर्भित व्याख्यान दिया । प्रस्ताविक वक्तव्य आचार्य वर्धमानसागरजी महाराज की संघस्थ बा.ब्र.सिद्धा दीदी ने देते हुए समाज की विकृतियों पर जोर दिया व आगम अनुसार क्रिया करने की प्रेरणा दी ।

गणिनी प्रमुख आर्यिका जिनदेवीजी, आर्यिका शिवमतीजी आर्यिका सम्यकश्री माताजी, आर्यिका विनम्रमती जी, आर्यिका चन्द्रप्रभमाताजी, आर्यिका सुज्ञानश्री माताजी, आर्यिका देशनामती माताजी ने कहा कि महिला चाहे तो मायका–ससुराल दोनों को संस्कारित कर सकती है । महिता है तो मंगल है । मॉ का मिलना भाग्य है, सुसंस्कार मिला सौभाग्य है, मॉ–महात्मा–परमात्मा का संयोग मिलना चाहिए । बचपन में मॉ, जवानी में महात्मा, वृद्धावस्था में परमात्मा मिल जाए तो जीवन सफल हो जाता है ।

सभी माताजी को मंचासीन श्रीमती सरिता जैन, श्रीमती शीला अनंतराज आदि ने वस्त्र भेंट कर उनका सम्मान किया । पूज्य भट्टारक स्वामीजी ने कहा कि श्रवणबेलगोला क्षेत्र में महिलाओं का अपना इतिहास है, महिला पुरुषार्थ व दृढ़निश्चय का प्रतीक होती है । वह यदि ठान ले तो सब कुछ कर सकती है। संचालन ब्र.जलजा जैन (तुमुकरु), ब्र.सिद्धा जैन, डॉ.संगीता विनायका ने किया ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में बिखरे संस्कृति के रंग

तीन दिनों तक संस्कृति की सुगंध से समाहित पट्ट महादेवी शान्तला सभा मण्डप विभिन्न सांस्कृतिक रंगों में रंगा हुआ था। हिन्दी–कन्नड़–केरल–तमिलनाडू की संस्कृति के विभिन्न रंग यहा देखने को मिले । सांस्कृतिक संध्या में ज्वालामालिनी नृत्य रुपिका, डांडिया, गाना एवं नृत्य, बाहुबली देव सुता ब्राह्मी एवं सुंदरी, नृत्य रुपक, नृत्यांजली अशोक कुमार को प्रस्तुत किया । शांतिनाथ महिला समाज हुबली, पंचक्षारणी महिला समाज बेनाड़ (केरला), कुष्माडिनी दि.जैन महिला समाज, श्रवणबेलगोला काललादेवी महिला समाज हासन, राजस्थान ग्रुप जयपुर, चक्रेश्वरी महिला समाज बेंगलूरु, मानवी महिला समाज बैंगलूरु, जिनवाणी महिला समाज ऐनापुर, दि.जैन समाज हुबली, खण्डेलवाल जैन समाज बेंगलूरु, जय भारती महिला समाज सालीग्राम, महिला समाज छब्बी, पद्मश्री जैन महिला समाज मैसूरु, महिला समाज बेलगॉव, ज्वालामालिनी महिला समाज कलसा ने बहुत ही सुंदर कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी का मन प्रसन्न कर दिया ।

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामजी महामस्तकाभिषेक महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन, महिला सम्मेलन स्वागत समिति अध्यक्ष श्रीमती शीला अनंतराज, संयोजक डॉ.संगीता विनायका, श्रीमती लता सुदर्शन, श्रीमती इन्द्रा बड़जात्या, श्रीमती कुमुदा नागभूषण, श्रीमती रजनी जैन (दिल्ली) आदि को परम् पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी के नेतृत्व में श्री सुरेन्द्र हेग्गड़े, श्री सुरेश पाटिल, श्रीमती अनिता सुरेन्द्र हेग्गड़े, श्रीमती सुप्रिया हर्षेन्द्र कुमार हेग्गड़े (धर्मस्थल) आदि ने सम्मानित किया। आभार सम्मेलन प्रभारी सेक्रेटरी श्री विनोद दोड्ण्णनवार (बेलगांवि) ने व्यक्त किया ।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व. दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

क्षमा करें और क्षमा मांग लें , जीत है इसमें हार नहीं
क्षमा वीर का आभूषण है , कायर का श्रृंगार नहीं

- आचार्यश्री सुनीलसागरजी महाराज

आत्मार्थीयों! उत्तम क्षमा, मृदुता, ऋजुता, निर्लोभता, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य रूप धर्म को परोसनेवाले पर्युषण पर्व संपन्न होने पर क्षमावाणी पर्व मनाया जाता है|

'मन की मलिनता दूर कर,मन मिलाने का अवसर है क्षमावाणी|'

क्षमा से ही पर्वाधिराज का स्वागत किया,उसीसे विदाई कर रहे है| जीवन में प्रारंभ से लेकर अंत समय तक क्षमा धर्म परम आवश्यक है यही संदेश दे रहा है यह पर्व| सबके साथ परंपरागत ढंग से मनाकर खा-पीकर चले गए,ऐसा काम नहीं करना| कहते है 'होय पूनम को पारणा और भूलो मंदिर को बारणा|' धर्म स्थान को भूल जाओगे तो भटक जाओगे| अपनी व दूसरों की भूलों को भूल जाना,इतना भी कर लिया तो पर्व मनाना सार्थक हो जाएगा| ज्ञानियों! वैसे तो ज्ञानी की हर पल क्षमावाणी होती है| साधू संघ भी दिन व रात को ऐसे दो बार नियम से प्रतिक्रमण करते है| श्रावक भी पर्व आदि के निमित से १५ दिन या ४ माह में कर लेते है| कुछ न करो तो वर्ष में एक बार सही,पर मन से जिनसे कुछ नाराजगी हो उनसे आज बात करलो| महावीर स्वामी का बड़ा प्यारा व मार्मिक शब्द है 'मिच्छामी दुककडम' या फिर कोई 'उत्तम क्षमा' ही कह देते है| क्यों बोलते हो?किससे कह रहे हो आप?समझो,आज तक हमने प्रमादवश कषायों के वशीभूत बहुत सी नादानियाँ की है,चेतन आत्मा को बहुत सताया है,बहुत रुलाया है| पहले स्वयं से क्षमा मांगना कि अब उन गलतियों को न दोहराऊंगा जिसके कारण अब तक भटक रहा| आत्मा से क्षमा,अब परमात्मा व गुरु जनों से क्षमा| उनके सामने अपनी गलती को मान लेना,पारदर्शी हो जाना तो वे आपके पथदर्शक बन जाएँगे| एक बार, जो भी किया गडबड,अपने को पूरा खाली कर देना फिर देखो कितना आनंद आता है| इससे जो उर्जा मिलती है,इस शक्ति से अब समस्त आत्माओं से क्षमा करने व मांगने को तत्पर हो जाते है|

जैनीयों ने अपने आपको इतना निर्मल व विकसित किया है कि वह एक चींटी पर पैर पड़ जाए तो प्रायश्चित करता है तो फिर वह पशुओं को कैसे दुःख देगाही ?अपने ही समान मनुष्यों का दिल कैसे दुखायेगा?इन विगत दिवसों में जो धर्म का स्वरुप समझा,मन की मलीनता दूर करने का पुरुषार्थ किया तो अब एक कदम और बढ़ाकर जो कुछ किसी के प्रति कुछ कचड़ा मन में भरा हो तो उसकी पूरी सफाई कर दो| अपने मन को सम्यक चिंतन व सद्भावनाओं से भर दो| अब मन में कोई ऐसा नाम या चेहरा है जिससे बोलने का दिल नहीं करता| कोई हो ऐसा जिसे watsapp पर ब्लोक (block) कर दिया हो| कुछ ऐसी बात जो आज भी दर्द देता हो?कई लोग बड़ी शान से कहते है कि 'मैं जिंदगी भर इस बात को नहीं भूलूंगा|' अरे ज्ञानी! अपने आपको खुद से ही इतनी बड़ी सजा मत दो|

भूतकाल से दूरी बनाओ,भूत-जीवों से नहीं|

बीती बातों को याद न करते रहे| बीत गया सो बीत गया,बीते के पीछे कौन रहे? तीर धनुष से निकल गया,तीर का पीछा कौन करे? कौन बुद्धिमान तीर निकलने के बाद पीछा करता रहेगा?बात को पकडे मत रहो| जितनी देर पकड़े रहोगे, उतनी मात्रा में दर्द बढ़ता चला जाएगा| मान लो,कोई आपको पुस्तक पकड़ा जाए| थोडी देर में रख दो तो ठीक वरना हाथ दर्द करने लगेगा और चार-छ घंटे पकडे रहो तो कंधे तक,कमर तक दर्द पहुँच जाएगा| वही दिनों से पकडे रहो तो?क्या हाल होगा?वजन तो उतना ही है, फिर?समझ आ रहा है?बात उतनी सी ही है,जरा सी बात,पर स्थिति (समय) बढ़ने से जैसे शरीर की स्थिति बिगडने लगती है वैसे ही मन के दर्द के संबंध में जानो| सालों बीत जाते है,कहते है कि उनसे नहीं बोलते| भले उन्ही के बारे में सोचते रहते,कोई मिले तो भी बताइये रहते,इंधन डालते रहते है| होता है कि नहीं?दया नहीं आती अपने साथ ऐसा करते हुए? फिर शिकायत लेकर आओगे – महाराज! आशीर्वाद दो,हार्ट की नली में ब्लोकेज (blockage) आया है या by pass surgery है?ऐसा सब भर कर ही क्यों रखते हो कि यह नौबत आए| अब अपना नुक्सान न करेंगे| समस्त शारीरिक तकलीफों की जड़ मन की यह कठोरता कहो या आत्मा की कमजोर अवस्था जो सबको पचा नहीं पाती,खुले दिल से स्वीकार नहीं कर पाती|

आज सबसे पहले उन सबको unblock करो| वह लिस्ट delete करो फिर देखो क्या कमाल होता है| कई लोग तर्क देते बैठते है कि मैं ही क्यूँ क्षमा माँगू?मेरी तो कोई गलती नहीं है| कई लोग ऐसे होने कि गलती करने पर भी आंस्ता नहीं है| आंसना समझे,कुछ चुभता नहीं है| पर जहाँ कोई परिणाम चुभे,दर्द महसूस हो कि बढ़ने न दे| समझलो,कुछ तो गलत सोचा है,बस उसके लिए क्षमा मांग लो| हलके हो जाओ| किसकी गलती है?मैं छोटा हूँ या बड़ा?बात किसने की,क्यों कि?यह सब महत्त्वपूर्ण नहीं है,मैं क्षमा करने स्वयं को मुक्त कर दूँ| मेरे अंदर कोई मलिनता या कटुता नहीं है| यह भाव प्रदर्शित करने आप सबसे मिलते है| भूतकाल को पकड़े रहोगे तो भूत बनकर भटकते रहोगे| वर्तमान

जो सामने है,उसे सुधार लो| जगत के समस्त भूतों मतलब अपने समान जीवों के प्रति क्षमा भाव धारण कर लो| कितना अच्छा हो जाए जब हमें कोई बुरा ही न लगे| तब जीवन में एक मीठापन आता है|

"जहाँ कषायों का विसर्जन हो,वहां क्षमा,मैत्री का विवर्धन हो| "

क्षमा मेरा अपना स्वभाव है,मेरी ताकत है| जहाँ चाहे जितना चाहे उपयोग करते रहे| कौन रोकता है आपको?कषायें दीवार बनती है,बस उसे हटाए और यह मंगलमय सूत्र अपनाए "खम्मामि सव्व जीवाणम,सव्वे जीवा खमंतु मे| मित्ती मे सव्व भुदेसू वैरं मज्झं ण केण वि|| " 'खम्मामि सव्व जीवाणम' अर्थात मैं सब जीवों को क्षमा करता हूँ| जब तक क्रोध भरा है तब तक यह सूत्र जीवंत न हो पाएगा| चाहे कोई कुछ भी करे,मैं शांत हूँ,क्षमाभाव धारण करूँ| इससे दूसरों का जब फायदा हो पर मेरा सबसे पहला फायदा है| याद रखो,यह वास्तविक उपलब्धि है| शक्ति है मेरी अपनी आत्मा की,कोई भूकंप आ जाए और मैं गिरूँ नहीं,स्थिर बना रहूँ| सकारात्मक सोच हो,क्षणिक गुस्से को जीत लूँ तो आसानी से सबको क्षमा कर सकता हूँ| बस अपना दिल पसीजना चाहिए| अकड़ कर बोल दो कि जा माफ़ किया तो शायद दूसरा हमें क्षमा न कर पाए| 'सव्वे जीवा खमंतु मे'- सब मुझे क्षमा करे इसीलिए अपनी समता व धैर्य काम करता है| मान के पूंछडे को पकडे रहो,दूसरों को गलत सिद्ध करने में लगे रहो तो न हो पाएगा| साथ ही कोई छल कपट नहीं होना तब जाकर के 'मित्ती मे सव्व भूदेसु' सबके प्रति मैत्री भाव विकसित हो पाएगा| जो अपने लिए चाहूँ वही दूसरों के लिए भी चाहूँ| जो मन में हो वही बाहर व्यवहार में हो ऐसी निश्छलता आने पर प्रेम व मित्रता टिकती है,विश्वास बना रहता है| यदि लोभ आ गया कि अमुक चाहिए तो फिर तो 'वैरं मज्झं ण केण वि' मेरा किसी से वैर भाव न हो'ऐसा हो नहीं सकता| यदि कुछ चाहिए तो फिर जो रुकावट बनता हुआ दिखा कि उससे वैर की गाँठ बंध ही जाएगी| मुझे मिलना था और वह दूसरों को मिल जाए तो फिर वह इंसान पसंद नहीं आता| इन्ही अवरोधकों को मिटाना होगा| हम सिर्फ उन्ही से क्षमा न मांगे जिनसे दोस्ती है| जो प्रतिद्वन्दी है,प्रतिस्पर्धी है, उन्हें प्यारी सी मुस्कान के साथ welcome करे| ऐसे चारों कषायों का विसर्जन का मार्मिक संदेश देनेवाला यह सूत्र आत्मसात करो| अब देर न करो| शरीर की गाँठ चिता पर जलने पर चली जाएगी पर बैर की गाँठे जन्मों तक साथ जाती है| हमें ही पीछा छुड़ा लेना पड़ेगा|

जिस भाई के साथ बचपन में खेलते थे, वहाँ मान की दीवार खड़ी हो जाने पर बटवारा क्या हुआ कि बस,उनको देखना भी पसंद नहीं करते| जरा सी बात हो जाए जैसे आपके घर के पौधे का फूल मेरे यहाँ कैसे आया?अड़ गए,खिंचते रहो जितना चाहो पर उपलब्धि क्या होगी?कोई एक अकड में हो तो दुसरे को समझदार बन जाना चाहिए| हाथ जोड़ लो,शायद मुझसे कठोर वचन निकल गए हो,खत्म करो अब गले लगा लो कितना ही कठोर दिलवाला हो,एक बार पिघल ही जाएगा| इतना आसान नहीं है,यह कायरों का काम नही है|

'क्षमा'- वह क्षमतावान माँ है जो सबसे प्रेम करना सिखाती है|

'क्षमा' शब्द क्षमता अर्थात सामर्थ्य का सूचक है| मैं कमजोर हूँ, मैं हार गया इसीलिए हाथ जोड़ रहा हूँ यह गलतफेमि दूर करो| आत्मा के स्वर पर रिश्ता हो वहां क्षमा,प्रेम,करुना,समता,परम स्वीकार भाव होता है| ईगो के स्तर पर रिश्तों में टकराव,मन-मुटाव होता है,सहनशीलता में कमी आती है| मैं शक्तिशाली प्रेमस्वरूप ज्ञायक प्रभु आत्मा हूँ,इतना कमजोर नहीं कि छोटी छोटी बातों को लेकर स्वयं को या दूसरों को दुखी करूँ| प्रभु पार्श्वनाथ पर कितना घोर उपसर्ग हुआ फिर भी हर बार कमठ को क्षमा किया| क्यों?जवाब न दे पाते इसीलिए चुपचाप शांत बैठे रहे?बताओ ज्ञानियों! अरे,कोई गलती करें तो मैं क्यों करूँ,अपना नुक्सान क्यूँ करूँ?वो जो करें,उसकी मर्ज़ी| मैं अपना स्वभाव न छोड़ू| हर बार कमठ ने अपना घात किया,पारस का कुछ बिगाड़ न पाया| हर बार स्वयं को सशक्त किया,निर्मलता बढाते हुए सबको जीतकर मुक्त हो गए| समझों!अभी विवेक है,समझ है इसी पर्याय में आज ही मामला सुलझा लो| क्या पता कल या वो न रहे या हम| फिर बात बिगड़ जायेगी| याद रखो, अपनी गलती को स्वीकार कर लेना सबसे बड़ी तपस्या है| सबको क्षमा करना सबसे बड़ी महानता है| वीरता का परिचायक है| आज उनसे मिलने पर सहज मुस्कान आ जाये,चेहरा खिल जाए समझना क्षमावाणी मनाना सार्थक हो गया| हमारे अवगुणों का क्षय करनेवाली माँ है क्षमा| माँ समान वात्सल्य व प्रेम से भर जाऊं,अपना कर्तव्य कर लूँ| दूसरा क्षमा करें,न करें,वह जाने| हम करें| खूब उपवास कर लिए, पूजाएँ रचा ली पर यदि स्वामीवात्सल्य में अमुक को नहीं बुलाया तो समझ लो धर्म व्यर्थ है| बुरा मत मानना| उत्तम क्षमा कर लेना पर धर्म का मर्म समझलो| करोड़ो पुष्पों से पूजा करने से एक बार स्तोत्र पढ़ना उत्तम है| करोड़ों स्तोत्र पढने से भी एक बार का जाप करना श्रेष्ठ है| करोड़ों जाप करने से एक बार ध्यान करना अच्छा है| करोड़ों बार ध्यान करने से भी एक बार क्षमा करना सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है| ऐसे महिमाशाली क्षमा को जीवंत जीओ, जिनशासन जयवंत हो यही मंगल भावना|

||| ॐ नमः |||

अन्तर्मन की कलुषित गांठों को निकालकर एक-दूसरे से क्षमा-याचना करना ही है वास्तविक क्षमावाणी

ध्रुव कुमार

जैन धर्म के सभी पर्व शात्म-शात्र की शिक्षाओं से ओत प्रोत हैं। ऐसा ही एक पर्व क्षमावाणी है जो पाणी को, उसके कलुषित विकारों से मुक्ति दिलाकर उसकी आत्मा को निर्मल बनाकर मुक्ति को पंथ प्रदर्शित करता है। क्षमावाणी पर्व को उद्देश्य बैर-भाव को छोड़कर सच्चे मन से एक दूसरे से क्षमा-याचना करना है और एक दूसरे प्रति क्षमा भाव धारण करना है।

हस सभी जानते हैं कि अनादि काल से ही प्रत्येक आत्मा आत्मा में ही उत्पन्न, आत्मा के विकारों-क्रोध, मान, माया, लोभ, असत्य, असंयम आदि से अशानित और दुखी रहता आया है और दशलक्षण के ये दश-धर्म हमें उन आत्मा के विकारों से छुटकारा दिलाने में सहायक है, फिर भी उत्तम क्षमादि दश-धर्मों को जीवन में उतारने से हम करतय रहे हैं।

क्षमावाणी का पर्व हमें संदेश दे रहा हैं कि हे भव्य-खुद को निहार खुद को ढूंढ, खुद में ही ढूंढ- यदि तेरा किसी से बैर हो गया है तो खुद ही उसमें पास पहुंचकर अपनी मृदु वाणी से क्षमा माँगकर अपने अन्दर के सुकून को वापर्स लाने के लिए बैर भाव को खत्म कर। यह मत देख कि कोई क्या कहेगा या तेरे स्वाभिमान को कोई चोट पहुंचेगा बल्कि यह सोच कि क्षमा वारस्य भूषणम् अर्थात क्षमा वीरो का ही अभूषण है, किसी कमजोर का नहीं/ यदि तू यह सोचता है कि बैर भाव मिटाने हेतु क्षमा-याचना कब से आरम्भ करूँ तो क्षमावाणी का महापर्व आ गया हैं और इस महा पर्व से इस शुभ कार्य का आरम्भ कर और समापन तब हो जब तकदोनों तरफ के बैर भाव या कोधादि भाव समाप्त न हो जाये। क्षमा आत्मा का स्वरुप है। सभी को आत्म-स्वरुप के रक्षार्थ क्षमा-व्रत, धारण करना चाहिए और मन के कलुषित विकारों को निकालकर एक दूसरे से क्षमा मांगकर आत्मा को प्रदूषित होने से बचाना चाहिए। मन के क्रोधादि विकारों का नष्ट होना ही, भव-भटकन से छुटकारा पाने की ओर एक कदम आगे बढ़ना हैं।

युगों-युगों से यह पर्व हमें अन्तिम सुख तक पहुँचाने हेतु दस-धर्म रुपी किरती पर सवार होने को शिक्षा देता आ रहा है, परन्तु हम उन्हीं आत्मा के विकारों में फंसे रहते हुए, खुद को उसी में उलझात हुए अपना यह भी जीवन उसी में होम देते हैं और फिर युगों-युगों तक पश्चाताप की ज्वाला में जलते रहते हैं।

क्षमावाणी का यह पर्व हर बार यह प्रश्न करता है कि पर्यूषण के दस धर्मों के आयछन के पश्चात् भी हमारी आत्मा क्यों निर्मल हो चुकी है आत्मा के सारे विकार क्या नष्ट हो चुके हैं? आत्मा में किसी तरह की मलीनता तो नहीं हैं? यदि सारे जबाव, सकारात्मक हैं तो हमारा कोई बैरी हो ही नहीं सकता, क्योंकि दश-धर्म के आराधत के पश्चात् हमारी आत्मा स्वत: ही बैरभाव के प्रति क्षमाभाव धारण कर चुकी होती हैं, और यदि जबाव सकारात्मक नहीं है तो क्षमावाणी महापर्व के सन्देश को अपनाओं।

आज का समय कम्पटीशन का है। आज हर कोई अपने-अपने क्षेत्रों में आगे बढ़ने हेतु आत्मा को प्रदूषित करने में जरा सा भी नहीं झिझक रहा है। केवल सफलता ही एक मात्र लक्ष्य रह गया है। परन्तु आधुनिक परिवेश में भी यह पर्व कम से कम जैन-समाज में एक ठहराव का अवसर अवश्य दे रहा है। ठहराव ही चिन्तन को पैदा करती है और चिन्तन से यह भाव अवश्य ही मन में आता है कि अमुक का मैनें अहित किसा हैं और उनसे क्षमा मांगनी चाहिए। इस भाव का पैदा होना ही इस पर्व की सफलता है।

कुछ क्षेत्रों में आज यह पर्व पूरी तरह से आधुनिकता की भेंट चढ़ चुका है। आत्मा कल्याण का यह महापर्व जो मनो-मालिन्य हो डालने में पूरी तरह से समर्थ है, आज केवल शिष्टाचार तक ही सीमित रह गया है। क्षमा-याचना कार्ड अब इस पर्व को मनाने का बेहतर तरीका बन चुका है। आज हम सुन्दर-सुन्दर काड़ौं को इष्टा-मित्रों को भेजते हैं, अपनों से गले लगकर मिलते हैं, एक दूसरे से क्षमा-याचना भी करते हैं, मोबाईल से क्षमा-याचना सम्बन्धी सन्देश भी भेजते हैं, लेकिन यह सब यन्तवत/क्या यही है इस पर्व को मनाने का तरीका?

इस पर्व पर हमने माफी तो मांगी पर उनसे नहीं नहीं जिनके प्रति हमने अपराध किया है- अनजाने में नहीं, जान बहन कर किया है। क्षमावाणी कार्ड तो हमने भेजा परन्तु उन्हें नहीं, जिन्हें भेजना आवश्यक था। मोबाइल से हमने सन्देश तो भेजा परन्तु उन्हें नहीं, जिनसे कुछ बैर था। क्या यही है क्षमावाणी पर्व की शिक्षायें? क्या यही है इस पर्व का उद्देश्य? क्या यही है मनोमालिन्य होनि का तरीका? न मित्रता ही बढ़ी और न शत्रुता ही होती।

क्षमावाणी जिसका उद्देश्य बैर-भाव को मिटाकर आपसी भाई-चारे पर बल देना है, जिसका उद्देश प्रेम-भाव का संचार कर मनोमालिन्य आत्मा को प्रेम-रस से धो देना है, और जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर जैन एकता को बढ़ावा देना है-आज अपने इस महापर्व के अवसर पर समस्त जैन समाज से अपील करता है कि हमारा हित हमारी एकता में हैं, यदि ऐकता की डोर टूट गयी तो हमारे धर्म और हमारे समाज का कितना अहित हो सकता इसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। इसलिए हमें श्वेताम्बर दिगम्बर और पंथों के बन्धन से ऊपर उठकर, आपसी भाईचारे के साथ, धर्म और समाज के हितार्थ आखों बढ़ना चाहिए और आत्म कल्याणार्थ क्षमा भाव- धारण करना चाहिए।

आइये हम सभी क्षमावाणी के इस महापर्व पर मन की कलुषित गांठों को निकालकर एक-दूसरे से क्षमा-याचना करें, किसी भी तरह का बैरभाव मन में न पलने दें, यदि किसी का हमारे कारण कुछ भी अहित हुआ है तो इस पर्व पर उनसे सबसे पहले क्षमा-याचना करे और पुन: उनसे अपनी मित्रता बढ़ायें।

जय जिनेन्द्र

प्राकृताचार्य श्री सुनीलसागरजी महाराज

– शांतिलाल जैन, जांगड़ा
उदयपुर (राज.)

आचार्य श्री सुनीलसागरजी दिगंबर जैन परंपरा के वर्तमानकालीन प्रमुख आचार्यों में से एक हैं। मुनिकुंजर आचार्य श्री आदिसागरजी अंकलीकर परंपरा के चतुर्थ पट्टाचार्य आचार्य श्री सुनीलसागरजी एक उत्कृष्ट साहित्यकार, अच्छे प्रवचनकर्ता एवं कुशल संघ संचालक हैं। मध्य प्रदेश के सागर जिले के अन्तर्गत तिगोड़ा ग्राम के श्रेष्ठी भागचन्द जैन एवं मुन्नीदेवी जैन के यहां अश्विन कृष्ण दशमी, वि. सं. 2034 (7 अक्टूबर सन् 1977) को जन्में बालक संदीप का प्रारंभिक शिक्षण किशनगंज (दमोह) में तथा उच्च शिक्षण सागर में संपन्न हुआ। शास्त्री एवं बी. कॉम. परीक्षाओं के मध्य आप वैराग्योमुख हुए। 20 अप्रेल 1997, महावीर जयंती के पावन दिन आपको आचार्य श्री सन्मतिसागरजी द्वारा बरुआसागर (झांसी) में जैनेश्वरी दिगम्बर दीक्षा प्रदान की गई और आप मुनि सुनीलसागरजी के नाम से प्रख्यात हुए। माघ शुक्ल सप्तमी दिनांक 25 जनवरी 2007 को औरंगाबाद (महा.) में गुरु के कर कमलों से आपको आचार्य पद प्रदान किया गया। अच्छे विद्वान उत्कृष्ट साधक, अच्छे प्रवचनकर्ता, साहित्यकार, बहुभाषाविद् आदि गुणों के कारण तपस्वी सम्राट आ. सन्मतिसागरजी की समाधि से पूर्व उनको 2010 में 23 दिसंबर को पट्टाचार्य पद प्रदान किया गया, 24 दिसम्बर को गुरु की समाधि हुई एवं 26 दिसम्बर को कुंजवन में आचार्य सुनीलसागरजी को पट्टाचार्य पद प्रदान करने की विधिवत घोषणा हुई।

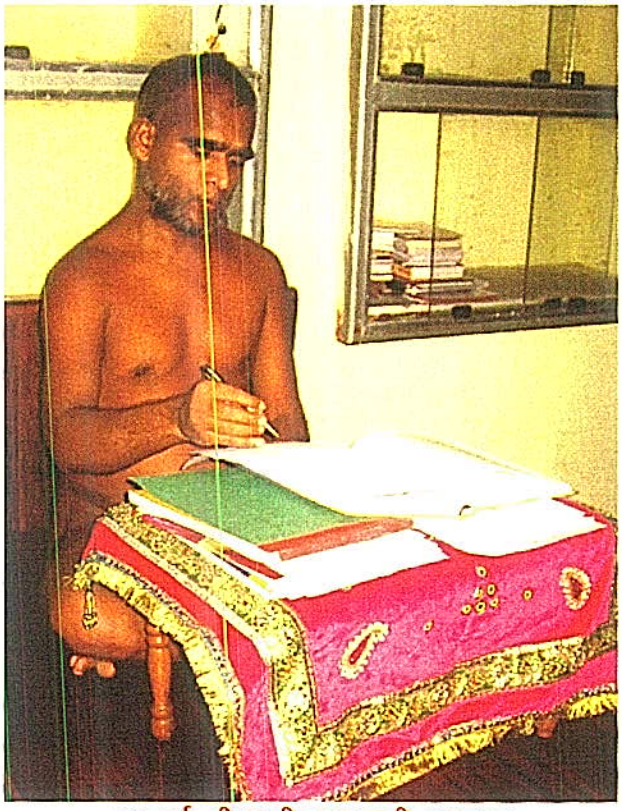

आचार्य श्री सुनीलसागरजी महाराज

साहित्य सृजनकर्ता आचार्य – प्राकृत साहित्य सृजन की क्षीण होती जा रही प्रक्रिया को वर्तमान में पुनरूज्जीवित करने के प्रयासों के अन्तर्गत आचार्य सुनीलसागरजी द्वारा रचे गये प्राकृत साहित्य का योगदान महत्वपूर्ण है। थुदी संगहो (स्तुति संग्रह), णीदी संगहो (नीति संग्रह) भावणा सारो (भावना सार), अज्झप्पसारो (अध्यात्मसार), णियप्पज्झाण सारो (निजात्मध्यान सार), भावालोयणा (भावालोचना), वयणसारो (वचन सार), सम्मदी सदी (सन्मति शती), भद्दबाहु–चरियं (भद्रबाहु चरित) एवं बारह–भावणा (बारह भावना) इनकी प्राकृत रचानाएं हैं। इनके इन दस प्राकृत ग्रंथों को समग्र रूप में 'सुनील प्राकृत समग्र' ग्रंथ के रूप में भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से भी प्रकाशित किया गया है। आचार्यश्री की रची गई भारदी–त्थुदी (भारती स्तुति)–जयदु भारदी को उनके प्रवचनों के उपरान्त जिनवाणी स्तुति के रूप में टेप किये गये संगीत के साथ प्रस्तुत किया जाता है। प्रवचन में आने वाले भक्तगण साथ–साथ जब उसे लय के साथ भाव विभोर होकर गाते हैं तो उससे आचार्यश्री की प्राकृत रचनाओं के माधुर्य एवं रचना कौशल की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। 'प्राकृत बोध' के नाम से उन्होंने प्राकृत व्याकरण भी लिखा है। उनके प्राकृत साहित्य के प्रति विशिष्ट योगदान के कारण वे प्राकृताचार्य के रूप में जाने जाते हैं।

प्राकृत रचनाओं के अतिरिक्त 'विश्व का सूर्य' 'दूसरा महावीर' 'अनूठा तपस्वी' आदि उनकी जीवन वृत से संबंधित रचनाएं हैं। सर्व सामान्य–विशेषतः युवा वर्ग को सद् आचरण की ओर अभिमुख करने वाली प्रेरक कृतियों के अन्तर्गत 'पथिक', 'धरती के देवता', 'मानवता के आठ सूत्र', 'ब्रह्मचर्य विज्ञान' एवं 'जैनचार विज्ञान' प्रमुख हैं। उन्होंने उपन्यास, यात्रा वृतांत, निबंध, कविताएं, भक्ति संग्रह, संस्कृत ग्रंथों के हिन्दी टीका ग्रंथ आदि रचनाओं का भी लेखन किया है। अब तक उनके 43 ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

कुशल संघ संचालक – आपके संघ में वर्तमान में उनके अतिरिक्त 52 पिच्छीधारी साधक हैं। जिसके अंतर्गत 13 मुनि, 18 आर्यिकाएं 8 क्षुल्लक एवं 13 क्षुल्लिकाएं हैं। आप क्रम से दीक्षाएं प्रदान करते हैं, अर्थात पहले ब्रह्मचारी, उसके बाद क्षुल्लक, ऐलक और फिर मुनि दीक्षा देते हैं। आचार्य श्री अनुशासन प्रिय हैं। उनके संघ में किसी प्रकार का संघर्ष अथवा मन मुटाव नहीं है। उनके संघ में अनुशासन का प्रमुख कारण संघ के साधु–साध्वियों एवं त्यागियों के प्रति उनका वात्सल्य है।

प्रजातंत्र की समस्याओं का समाधान अनेकांत की सापेक्ष दृष्टि

-डॉ० पी०सी० जैन
चेयरमेन
सरस्वती उच्चस्तरीय अध्ययन अनुसंधान संस्थान

सत्य एक सापेक्ष अनुभूति है। अखंड सत्य को केवल सर्वज्ञ ही जान सकता है। एक-एक पदार्थ की अनंत-अनंत पर्यायें हैं। आदमी एक पदार्थ की सारी पर्यायों को भी नहीं जान सकता तो समस्त पदार्थों की समस्त पर्यायों के जानने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। एक पदार्थ में भी अणु की अनंत पर्याय है। अणु के बारे में पुराने जमाने में भी बहुत चर्चाएं हुई हैं। वर्तमान युग में भी बहुत खोज हुई है। अणुबम का आविष्कार हुआ है। पर रहस्य इतने गहरे हैं कि जो जाना गया है उससे जिज्ञासाएं अधिक प्रबल हुई हैं। मनुष्य का ज्ञान ज्यों-ज्यों विकसित होता जा रहा है, त्यों-त्यों उसे पता लग रहा है कि उसका अज्ञान ज्यादा गहरा है। ऐसी स्थिति में सापेक्षता को समझना अत्यन्त आवश्यक है। जीवन के हर एक पक्ष में सापेक्षता को समझना जरूरी है। प्रजातंत्र में भी सापेक्षता को समझना जरूरी है, बल्कि प्रजातंत्र तो सापेक्षता के बिना चल ही नहीं सकता।

प्रजातंत्र का स्वरूप :

लोकंतत्र का अर्थ है कि जनता के लिये, जनता के द्वारा, जनता का शासन। मनुष्य ने आदिकाल से लेकर आज तक अनेक शासन प्रणालियों का प्रयोग किया। कभी दंडबल का शासन हुआ तो कभी बाहुबल का। पर हर शासन प्रणाली में व्यक्ति ही प्रमुख रहा। व्यक्ति का सोच व्यापक रहे तब तो काम चल जाता है पर जब सोच संकीर्ण बन जाता है तो अनेक समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। इसीलिये वर्तमान में प्रजातंत्र को प्रतिष्ठा मिली। प्रजातंत्र में हर व्यक्ति को आगे बढ़ने का अधिकार है, इसीलिए यह सोचा जा रहा है कि प्रजातंत्र ही सर्वोत्कृष्ट शासन प्रणाली है। आज साम्राज्यवाद इतिहास की चीज बन गया है। कहीं यदि सम्राट् है तो भी वे केवल अलंकारिक हैं। शासन सता तो प्राय: जनता के ही हाथ में है।

प्रजातंत्र के मौलिक सूत्र :

स्वतंत्रता, समानता, सहयोग, सहानुभूति, समन्वय और सहिष्णुता ये अनेकांत के कुछ ऐसे मौलिक तत्व हैं जो प्रजातंत्र को भी प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं। पर ये सारे मूल्य भी निरपेक्ष नहीं हो सकते। सापेक्षता के बिना उनसे अनेक विकृतियाँ भी संभव हो सकती हैं।

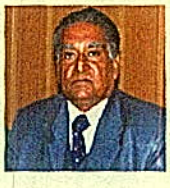

इसमें कोई संदेह नहीं कि स्वतंत्रता एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। कोई भी व्यक्ति परतंत्र नहीं रहना चाहता। व्यक्ति तो क्या, कोई पक्षी भी परतंत्र नहीं रहना चाहता। स्वतंत्रता के लिये आदमी सब कुछ दांव पर लगा देता है। स्वतंत्रता के सामने पैसे का तो कोई मूल्य ही नहीं है। आदमी भूखा रह कर भी स्वतंत्र रहना चाहता है। बल्कि स्वतंत्रता के लिए वह प्राणों से भी खेल जाता है। दुनियां का पूरा इतिहास ऐसे बलिदानों से भ[illegible] पड़ा है पर सवाल यह है कि क्या स्वतंत्रता भी निरपेक्ष हो सकती है? उतर इसका यही हो सकता है कि स्वतंत्रता के लिए भी सापेक्षता जरूरी है।

एक राष्ट्र आजाद हुआ। लम्बे समय तक गुलाम रहने की कसक सबके मन में थी। आजादी के क्षणों में सबका मन उत्साह से भरा हुआ था। सब खुशियों में मगन थे। एक बुढ़िया भी आजादी के भावावेश में इतने उत्साह से भर गई कि सड़क के बीच आकर लेट गईं। सामने से एक ट्रक आ रहा था। ड्राईवर ने हार्न बजाया, पर बुढ़िया तो ठस से मस न हुई। आखिर ड्राईवर को नजदीक आकर कहना पड़ा-माताजी! सड़क मत रोको, एक किनारे हो जाओ। बुढ़िया ने तड़क कर कहा-एक ओर क्यों हो जाऊं? मेरा देश आजाद हो गया। मैं कहीं पर भी सोने के लिये स्वतंत्र [illegible] ड्राईवर ने धीरे से कहा-'माताजी! आप सड़क के बीच में सोने के लिये स्वतंत्र हैं तो मैं भी आपके ऊपर से गाड़ी निकालने के लिए स्वतंत्र हूँ।' तत्काल बुढ़िया को एक किनारे हो जाना पड़ा।

समाज में जीने के लिए हर आदमी को हर स्तर पर सापेक्षता को जीना आवश्यक है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मूल्य है, पर वह उसी हद तक स्वीकार्य है जिस हद तक दूसरे के लिए बाधक नहीं बनता। महात्मा गांधी ने बहुत ही ठीक कहा था-मेरी स्वतंत्रता वहीं तक है जहाँ तक मेरे घर की सीमा है। उससे आगे मेरे पड़ौसी की स्वतंत्रता शुरू हो जाती है।

सचमुच! प्रजातंत्र में पड़ौसी की स्वतंत्रता का बहुत बड़ा मूल्य है। एक आदमी को इतनी स्वतंत्रता नहीं हो सकती कि वह दूसरे की उपेक्षा कर दे। इससे जीवन चल ही नहीं सकता। आदमी को

पग-पग पर अपने पड़ौसी का ध्यान रखना पड़ता है। एक बहुमंजिल बिल्डिंग के नीचे के फ्लैट में एक परिवार रहता था। जब वह अपनी अंगीठी जलाता तो धुंआ निकलता और वह ऊपर के फ्लैट में रहने वाले व्यक्ति को बाधित करता। रोज-रोज की यह समस्या असह्य हो गई तो उसने अपने नीचे के पड़ौसी से कहा- भाई! आपकी अंगीठी का धुआं हमें बाधित करता है अतः ऐसी कोई व्यवस्था करो जिससे हमें कोई कष्ट न हो। नीचे के पड़ौसी ने कहा-इसमें मैं क्या व्यवस्था कर सकता हूँ? धुएँ का स्वभाव है ऊपर जाने का। मैं उसे कैसे रोक सकता हूँ? मेरे पास इसका कोई इलाज नहीं है। ऊपर का पड़ौसी भी विवश था। पर कठिनाई तो उसके सामने थी। कुछ दिन बाद उसे एक उपाय सूझा और उसने घर की छत में एक छेद कर दिया। उस छेद में से गंदा पानी नीचे के पड़ौसी के फ्लैट में गिरने लगा। तब उसने कहा-भाई! यह 1या करते हो? तुम्हारे गंदे पानी से मेरा तो सारा घर ही गंदा हो रहा है। ऊपर वाले ने कुटिल व्यंग्य करते हुए कहा-भाई! इसमें मैं 1या कर सकता हूँ? पानी का स्वभाव है नीचे जाने का। मैं उसे कैसे रोक सकता हूँ? मेरे पास कोई इलाज नहीं है। अब नीचे का पड़ौसी विवश था। आखिर दोनों को मिलकर समझौता करना पड़ा कि नीचे का पड़ौसी धुएं की व्यवस्था करेगा और ऊपर का पड़ौसी पानी को नीचे आने नहीं देने की व्यवस्था करेगा। सचमुच! आदमी को इसी तरह पग-पग पर अपने पड़ौसियों से समझौता करना पड़ता है। जब समझौता होता है तभी दोनों को स्वतंत्रता मिलती है। यदि एक भी निरपेक्ष हो जाए तो कोई भी सुख से नहीं रह सकता।

समाज में एक-दूसरे के साथ रहने के बहुत कानून बने हुए हैं। बहुत बड़ा संविधान बना हुआ है। पर कानून या संविधान हो जाने मात्र से काम नहीं चलता। जब तक कानून तथा इसकी भाषा सापेक्षता नहीं समझी जाती तो वे ही झगड़े के मूल कारण बन जाते हैं।

लार्ड एक्टन के अनुसार मनुष्य का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है धर्म और उसके बाद स्वतंत्रता। धर्म और स्वतंत्रता परस्पराधारित है। संयमित स्वतंत्रता समाज की सबसे मूल्यवान निधि है। आधुनिक सदयता के विकास का संबंध मनुष्य की स्वतंत्रता और उसकी गति को सुस्थिर करना है। जो स्वेच्छा से अपने आप पर अनुशासन कर सकता है वास्तव में वही स्वतंत्र है, क्योंकि उसने अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को दूसरे की आवश्यकता और इच्छा के साथ जोड़ी है। जिसकी इच्छाएं वश में न हो, वह स्वेच्छाचारी तो बन सकता है, स्वतंत्र नहीं। मनुष्य की चेतना का अर्थ ही है कि वह अपने मन पर अनुशासन कर सकता है, शेष प्राणी अपने मन पर नियंत्रण नहीं कर सकते। इसलिए वे स्वेच्छाचारी बन सकते हैं, स्वतंत्र नहीं।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रजातंत्र की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसमें कोई संदेह नहीं कि अपनी भावना को प्रकट करना सबको अच्छा लगता है। पर जब अभिव्यक्ति में सापेक्षता नहीं होती है तो एक शहद ही महाभारत खड़ा कर देता है। यह निश्चित है कि अभिव्यक्ति पर से सापेक्षता का अंकुश हटता है तो विवाद बढ़ता ही है। असल में निरंकुश अभिव्यक्ति तो एक तीखा प्रहार है। वचन का घाव बड़ा गहरा होता है। प्रजातंत्र में जीने वाले व्यक्ति को न केवल बोलने और लिखने में ही संयम रखना पड़ता है अपितु समझने में भी सापेक्षता का ध्यान रखने की आवश्यकता है।

प्रजातंत्र की प्रतिष्ठा से पहले अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसी कोई चीज नहीं थी। हर इंसान मुंह खोलने और कलम, कैंची या छैनी उठाने से पहले दस बार सोचता था कि मेरे कहे या रचे पर समाज और शासक की क्या प्रतिक्रिया होगी? अपने समाज की या राच्य की मान्यताओं के विरोध में कुछ कहना या करना बिरादरी से बाहर कर दिए जाने का खतरा मोल लेना था, पर प्रजातंत्र ने मनुष्य को अभिव्यक्ति की ताकत दी। आज एक छोटे से छोटा व्यक्ति भी बड़े से बड़े आदमी या घटना के बारे में अपनी राय प्रकट कर सकता है। पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ नहीं हो सकता कि आदमी चाहे जो अनर्गल बात कह दे।

आज अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर प्रिंट तथा डिजिटल मीडिया द्वारा जो अभद्र और अपसांस्कृतिक चीजें प्रस्तुत की जा रही है उसे स्वतंत्रता का सदुपयोग नहीं अपितु उसका दुरुपयोग ही कहा जायेगा। यह स्थिति तभी बनती है जब आदमी अपनी स्वतंता के लिए सामुदायिक स्वतंत्रता का मूल्यांकन नहीं करता।

प्रजातंत्र में वोट के रूप में न केवल अपने मत की अभिव्यक्ति का स्वतंत्र अधिकार मिलता है अपितु सता की भागीदारी का भी अधिकार मिलता है। एक छोटे से छोट आदमी को भी सताशीर्ष पर पहुँचने की स्वतंत्रता प्राप्त है। पर इस स्वतंत्रता की भी एक सीमा है। कोई भी व्यक्ति यदि अपनी मतांधता से साम्प्रदायिक सौहार्द को चोट पहुँचाता है या जातीयता को प्रस्थापित करना चाहता है तो वह स्वतंत्रता का दुरुपयोग ही कहा जायेगा अन्य लोगों की स्वतंत्रता का आदर करना अनेकांत दृष्टि से ही संभव है।

पक्ष-प्रतिपक्ष :

प्रजातंत्र के साथ पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों होते हैं। पक्ष के साथ-साथ प्रतिपक्ष का होना भी जरूरी है। वास्तव में तो पक्ष और प्रतिपक्ष दोनो जुड़े हुए हैं। ये वस्तु के स्वभाव हैं। जहाँ पक्ष होगा वहाँ प्रतिपक्ष होगा ही। यदि प्रजातंत्र में केवल एक पक्ष ही बन जाये तो वह एकांगिता हो जायेगी। एक पक्ष के लोग मिलकर कोई भी निर्णय कर लेंगे तो उसमें त्रुटि रह सकती है। प्रतिपक्ष होता है तो वह उस त्रुटि का निराकरण करा सकता है। प्रजातंत्र में प्रतिपक्ष की तो आवश्यकता है, पर विपक्ष की नहीं। विपक्ष का तो मतलब ही होता है विरोध करना। विरोध करना सिद्धांत नहीं बन सकता। प्रतिपक्ष विरोध नहीं है। वह तो संतुलन है। जहाँ भी पक्ष कोई गड़बड़ी करता दिखाई दे, उसमें संतुलन बिठाना यही प्रतिपक्ष है। विरोध के लिए विरोध विपक्ष है। संतुलन के लिये विरोध यह प्रतिपक्ष है। इसलिए प्रजातंत्र में प्रतिपक्ष की बहुत बड़ी भूमिका है। यही समन्वय है।

पक्ष और प्रतिपक्ष में संतुलन अनेकांत दृष्टि से ही संभव हो सकता है। दर्शन शास्त्र की दृष्टि से हर पदार्थ सप्रतिपक्ष होता है। जीव है तो अजीव भी है ही। इसी तरह जहाँ भेद होता है वहाँ अभेद भी होता है। बल्कि भेद और अभेद का सह अस्तित्व है। एक ही पदार्थ में जहाँ भेद है वहाँ अभेद भी है। दिखने में यह बात जरा अजीब लगती है। भेद और अभेद दोनों साथ कैसे रह सकते हैं ? पर सापेक्षवाद का यह ध्रुव सिद्धांत है। इसकी एक लंबी दार्शनिक चर्चा है। पर उसे हम एक व्यावहारिक उदाहरण से समझ सकते हैं। जैसे एक आदमी भारतीय है। भारत देश की अभेद दृष्टि से वह भारतीय है पर यदि हम प्रदेश की भेद दृष्टि से देखेंगे तो वही आदमी आसामी, तमिल या राजस्थानी हो सकता है। भारत एक अभेद दृष्टि है पर उस अभेद में प्रदेशों का भेद भी समाया हुआ है। भेद और अभेद का सहअस्तित्व हर कदम पर है। पूरी दुनिया की अभेद दृष्टि से देखें तो हम एक वैश्विक मानव है, पर राष्ट्र की भेद दृष्टि से देखें तो हम भारतीय, चीनी, अमेरीकी आदि अनेक भेदों में बंट सकते हैं।

समानता :

प्रजातंत्र में समानता का महान् सिद्धांत है। यदि समानता की दृष्टि न हो तो प्रजातंत्र सफल हो ही नहीं सकता, क्योंकि जहाँ समानता है वहाँ असमानता होगी ही। भारतीयता एक समानता है वहाँ जाति, वर्ग, वर्ण, भाषा, सम्प्रदाय आदि की असमानता से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। समानता एक सत्य है तो असमानता भी एक सत्य है। इन दोनों को मिटाया नहीं जा सकता। ऐसी स्थिति में अनेकांत की सापेक्ष दृष्टि ही एक समाधान प्रदान करती है।

समन्वय :

भारत एक विस्तृत देश है। इसका विस्तृत भू-भाग है। कहीं पर्वत है तो कहीं मैदान है। एक ही नदी न जाने कितने प्रदेशों में होकर बहती है। ऐसी स्थिति में अभेद की दृष्टि नहीं हो तो पग-पग पर विवाद खड़े हो सकते हैं। प्रशासनिक, भौगोलिक आदि अनेक दृष्टियों से देश में प्रदेशों की विभक्तियाँ बनी हैं। विभक्तियाँ न हो तो देश का काम नहीं चल सकता। व्यवहार की सुगमता के लिए देश में प्रदेश व्यवस्था को भी स्वीकार करना पड़ता है। प्रदेश को भी अनेक भागों में बांटना पड़ता है। जहाँ अभेद की अनेकांत दृष्टि नहीं है वहाँ किसी भी प्रकार के खतरे खड़े हो सकते हैं। देश अखंडता को खतरा पैदा हो सकता है। सचमुच में यदि भेद तथा अभेद की दृष्टि स्पष्ट न हो तो आदमी शक्ति से सह अस्तित्व पूर्वक रह ही नहीं सकता। पंडित नेहरू ने इसी दृष्टि से पंचशील में सह अस्तित्व को स्थान दिया था। दुनियाँ के न1शें से राष्ट्रों को मिटाया नहीं जा सकता। दुनियाँ में अनेक प्रकार के भेद हैं- १. मान्यता का भेद २. विचार का भेद ३. रुचि का भेद ४. समभाव संस्कारों का भेद ५. संवेग का भेद आदि।

मान्यता के आधार पर सम्प्रदाय बनते हैं। विचार के आधार पर चिंतन बनता है। रूचि के आधार पर इन्द्रिय संवेदना बनती है। स्वभाव के आधार पर आदतें बनती हैं। संवेग के आधार पर व्यवहार बनता है। यदि दृष्टि इसी भेद पर ही उलझी रही तो दुनियाँ में कभी शांति स्थापित हो ही नहीं सकती। प्रजातंत्र का यही तकाजा है कि पूरी दुनियाँ में समानता की सापेक्ष दृष्टि का प्रचार किया जाय। ऐसे लोगों के मन में न तो नस्ल का भेद होता है, न ऊंच नीच का। अधिकांश भेद वास्तविक नहीं होते, वे मनुष्य के अपने द्वारा ही बनाये गये होते हैं।

जो सापेक्षता को समझता है उसे ये भेद कभी बाधित नहीं कर सकते। ऐसे लोग ही वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना में जी सकते हैं। दुनिया में सब कुछ एक दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है। बाहर भिन्नता दिखती है पर भीतर से सब कुछ जुड़ा हुआ है। अनेकता के नीचे छिपी हुई एकता को हम नहीं जानते। इसी प्रकार एकता के नीचे छिपी हुई अनेकता को भी नहीं जानते। दृष्टि की यह एकांगिता ही सारे झगड़ों का मूल है। जो आदमी इस तथ्य को नहीं समझता वह प्रजातंत्र को भी नहीं समझ सकता।

सहयोग :

पूरे विश्व की अपनी एक तालबद्ध नियामकता है। यहाँ एक एक गुण की अपनी गतिमयता है। पर वह गतिमयता एक स्थितिमयता से भी आबद्ध है। गति और स्थिति दोनों मिलकर विश्व की रचना करते हैं। यहाँ हर जीवन का अस्तित्व दूसरे जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। हर जीवन की गति स्थिति का दूसरे जीवन की गति स्थिति से गहरा संबंध है। वह प्रजातंत्र कभी मजबूत नहीं हो सकता जहाँ की समाज व्यवस्था मे सहयोग न हो। साम्राज्यवादी मनोवृति ने अर्थ-व्यवस्था, न्याय व्यवस्था को भी इस तरह कर रख दिया कि कुछ लोग युगों-युगों से सर्वहारा बने रहे। प्रजातंत्र की व्यवस्था भी तभी सफल हो सकती है जबकि पूरे समाज को लाभ मिले। प्रजातंत्र में भी यदि स्वार्थों ने अपना स्थान बना लिया तो हो सकता है एक वर्ग ऊपर उठ जाये, पर उसके साथ ही दूसरे वर्ग पिछड़ जायेंगे। वही प्रजातंत्र श्रेष्ठ है जो सबके लिए कल्याणकारी है। दुनियाँ में सबके स्वार्थ एक दूसरे से बंधे हुए है। उसी से एक संतुलन बनता है। जब भी वह संतुलन बिगड़ता है तो अव्यवस्था फैलती है।

एक माली और एक कुम्हार गांव से बाहर की ओर जा रहे थे। माली के पास कुछ सब्जियाँ थी और कुम्हार के पास कुछ मिट्टी के बर्तन। दोनों ही उन्हें बेचने शहर जा रहे थे। एक ऊंट पर एक ओर माली की सब्जी लदी हुई थी और दूसरी ओर कु6हार के बर्तन। दोनों का एक संतुलन बना हुआ था। दोनों ने एक-दूसरे के सहयोग किया तो कार्य ठीक चल रहा था। माली ऊँट के आगे-आगे चल रहा था और कुम्हार पीछे-पीछे चल रहा था। मार्ग में ऊंट को सब्जी की सुगंध आ रही थी।

उसने अपनी लंबी गर्दन को मोड़ा और पीठ पर लदी हुई सब्जी में से थोड़ी-थोड़ी सब्जी खाने लगा चूंकि कुम्हार पीछे-पीछे व माली आगे-आगे चल रहा था, अत: माली को यह पता नहीं चला कि ऊंट सब्जी खा रहा है। कुम्हार को पता चल रहा था कि ऊंट सब्जी खा रहा है। पर उसने ऊंट को टोका नहीं। वह सोचने लगा, सब्जी तो माली की है। नुकसान होता है तो माली का होता है। मेरा इसमें कोई नुकसान नहीं होता, मैं क्यों ऊँट को टोकूँ ? कई बार यह क्रम चलता रहा, माली बेखबर था। पर धीरे-धीरे एक ऐसी सीमा आई जब सब्जी और बर्तनों का संतुलन बिगड़ गया। बर्तन भारी हो गये, सब्जी हल्की हो गई। तत्काल पहले बर्तन गिरे और उसके ऊपर सब्जी गिर गई। एक धमाका हुआ। माली ने पीछे मुड़कर देखा तो स्तब्ध रह गया। उसने कुम्हार से पूछा, क्या हुआ ? कुम्हार ने कहा-तुम्हारा कुछ नहीं हुआ, थोड़ी सी सब्जी ऊंट ने खाई है, पर मेरे तो सारे बर्तन ही फूट गए हैं। मैंने सहयोगिता का धर्म नहीं निभाया, इसीलिए सारी गड़बड़ी हुई।

समाज व्यवस्था के लिए सहयोग जितना जरूरी है, असहयोग उतना ही जरूरी है। महात्मा गांधी ने अंग्रेजी सल्तनत का असहयोग किया। असहयोग का आंदोलन चलाया। स्वतंत्रता के लिये यह आवश्यक था। जब सहयोग की आवश्यकता हुई तो उन्होंने अंग्रेजों का सहयोग भी किया। कुछ लोगों ने उनका विरोध भी किया। पर गांधीजी ने कहा-अभी असहयोग का समय नहीं है। जिस समय असहयोग का समय आया तो उन्होंने असहयोग भी किया। पर उन्होंने असहयोग भी विनय पूर्वक किया। इसी से यह संभव हो सका की भारत को आजादी मिली। बुराई के साथ असहयोग भी जरूरी है। पर केवल असहयोग या सहयोग से काम नहीं चल सकता। बुराई के साथ असहयोग जितना जरूरी है, अच्छाई के साथ सहयोग भी उतना ही जरूरी है।

सहानुभूति :

प्रजातंत्र में सहानुभूति की भी बहुत आवश्यकता है। एक के सुख-दु:ख की अनुभूति जब सबको होती है तभी परिवार, समाज या राष्ट्र चल सकता है। यह ठीक है कि दर्द तो जिसको होता है उसी को होता है पर सहानुभूति होती है तो दर्द कम हो जाता है और उसका सामूहिक प्रतिकार किया जाये तो वह खत्म भी हो सकता है।

सहिष्णुता :

प्रजातंत्र मे सहिष्णुता का भी बहुत बड़ा स्थान है। यह सही है कि प्रजातंत्र में ४४ का बहुमत ३८ के अल्पमत से शक्तिशाली बन जाता है पर इसका यह अर्थ नहीं है कि बहुमत अल्पमत का निरादर करे। अल्पमत को भी अपनी सीमा को समझना जरूरी है पर बहुमत को भी अल्पमत के साथ सहिष्णुता रखना जरूरी है। यों सहिष्णुता सभी के लिये आवश्यक है पर उन लोगों के लिए ज्यादा जरूरी है जिनके पास शक्ति होती है। यह सही है कि सांप को क्षमा रखनी चाहिए, पर दूसरों के लिए भी यह जरूरी है कि वे जान बूझकर सांप पर पैर नहीं रखे। समन्वय का यह दृष्टिकोण ही प्रजातंत्र की सफलता का स्वर्ण सूत्र है।

इस प्रकार प्रजातंत्र की सफलता के लिए अनेकांत की सापेक्ष दृष्टि की अपनी बहुमुखी भूमिका है।

'काशी की विदूषी डॉ मुन्नी जैन को बेस्ट वोमेन अवार्ड'

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय ,वाराणसी में जैन दर्शन विभाग में पिछले अनेक वर्षों से अतिथि प्राध्यापिका के रूप में कार्यरत विदूषी डॉ मुन्नी जैन को कर्नाटक के श्रवणबेलगोल में विश्व प्रसिद्ध भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा के बारह वर्षीय महामस्तकाभिषेक २०१८ के निमित्त आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला में ११ से १३ अगस्त २०१७को आयोजित विशाल अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में साहित्य के क्षेत्र में योगदान के लिए सम्पूर्ण भारत वर्ष से चयन करते हुए "आदर्श महिला सम्मान" Best Women Award से नवाजा गया। अति प्राचीन ब्राम्ही लिपि के सरलीकरण ,इसके व्यापक प्रचार प्रसार तथा अनेक प्राचीन हस्तलिखित शास्त्रों की पांडुलिपियों के संपादन और पुरानी हिंदी साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए यह गौरवपूर्ण सम्मान उन्हें दिया गया है | उन्हें यह सम्मान कर्मयोगी जगद्गुरु स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी ,अखिल भारतीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी तथा महा मस्तकाभिषेक महोत्सव की अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम्.के.जैन ,महिला सम्मलेन की अध्यक्ष श्रीमती सरिता अनंतराज तथा प्रधानमंत्री देवेगौडा की धर्म पत्नी श्रीमती चेनम्मा देवेगोड़ा के द्वारा प्रदान किया गया | इस अवसर पर उन्हें स्वर्ण पदक ,प्रशस्ति पत्र ,श्रीफल ,शाल द्वारा सम्मानित किया गया | डॉ मुन्नी जैन ने अनेक हस्तलिखित प्राचीन दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संपादन किया है। आपने जैन दर्शन तथा प्राकृत एवं जैनागम में आचार्य,हिंदी से एम.ए.,B.Lib,काशी हिंदू विश्वविद्यालय से 'पंडित सदासुखदास जी का हिंदी गद्य के विकास में योगदान" विषय पर गहन शोधकार्य करते हुए पी एच डी की उपाधि प्राप्त की है। डॉ जैन ने विगत बीस वर्षों में ब्राह्मी लिपि के कई प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये हैं। इसके पूर्व भी आपके शोध प्रबंध पर दो पुरस्कार तथा उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा उत्कृष्ट संपादन हेतु राज्यपाल महोदय द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। आप एक मौन साधिका की तरह आरम्भ से ही सर्जनात्मक कार्यों की प्रेरणास्रोत रहीं हैं। योग ध्यान साधना सामयिक और पूजा पाठ में खुद को व्यस्त रखने वाली डॉ जैन ने परिवार बच्चों सहित घर गृहस्थी के सभी कार्य करते हुए ही यह साहित्य साधना की तथा सभी बच्चों को भी यही संस्कार दिए और उनको को भी संस्कृत तथा प्राकृत की प्राच्य विद्या की सेवा में लगाया है। आपके ज्येष्ठ पुत्र डॉ अनेकान्त कुमार जैन,दिल्ली को प्राकृत भाषा के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। आपकी बहु श्रीमती रूचि जैन 'जैन योग'की विशेषज्ञ हैं | आपकी पुत्री डॉ इंदु जैन ,दिल्ली ने प्राकृत भाषा में शोधकार्य किया है जो महावीर पुरस्कार से पुरस्कृत है | आपके छोटे पुत्र डॉ अरिहंत जैन मुंबई ने संस्कृत तथा दर्शन में शोध के साथ साथ प्राकृत भाषा पर डॉक्यूमेंट्री फिल्में बनाई हैं जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित हो चुकीं हैं। आप काशी के सुप्रसिद्ध वरिष्ठ मनीषी प्रो.फूलचंद जैन जी की धर्मपत्नी हैं। आपने अपनी हर उपलब्धि का श्रेय अपने पति को देते हुए कहा कि जब मेरा विवाह हुआ था तब मैं मात्र ग्यारहवीं कक्षा पास थी किन्तु इन्होंने मुझे अपना जीवन भारत के प्राचीन ज्ञान विज्ञान तथा वैभव को संरक्षित करने तथा और उस दिशा में अध्ययन करते रहने की पूरी प्रेरणा और पूरा सहयोग दिया | डॉ मुन्नी जैन विगत १५-२० वर्षों से दसलक्षण आदि पर्वों पर कलकत्ता,कानपुर,वाराणसी, मुंबई आदि अनेक स्थलों पर अपने प्रभावी प्रवचनों से तत्वज्ञान की धारा भी प्रवाहित कर चुकी हैं तथा अद्यतन कर रही हैं | विगत दिनों डॉ जैन ने प्रो.प्रेमी जी के साथ काशी की अनेक महिलाओं को संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थ तत्वार्थसूत्रम् का लगातार चार महीने प्रशिक्षण दिया तथा संस्कृत भाषा का अभ्यास करवाया था | डॉ जैन ने आज के युग में जैन दर्शन,प्राकृत -संस्कृत तथा संस्कृति की अभूतपूर्व निष्काम सेवा करके एक मिसाल कायम की है तथा उनकी इस उपलब्धि से काशी एवं जैन समाज की महिलाओं का गौरव बढा है |

– डॉ अनेकांत कुमार जैन ,नई दिल्ली, ९७११३९७७१६

महामस्तकाभिषेक प्रभावना रथ प्रारंभ

इन्दौर 15 अगस्त। 15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के अवसर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक प्रभावना रथ का प्रारंभ बड़ी धूमधाम व उत्साह के साथ प्रारम्भ हुआ। इसका प्रारम्भ इन्दौर के समोशरण मंदिर कंचनबाग से आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में विशल जन समूह के साथ प्रारम्भ होकर रवीन्द्रनाट्यगृह पहुंचा जहां विशाल सभा का रूप ले लिया। यहां विभिन्न समाजसेवियों ने इसके उद्देश्य व महत्व पर प्रकाश डाला। यह रथ समाज में समरसता, एकता, धर्मप्रचार, श्रमणबेलगोला में प्रत्येक बारह वर्षों में होने वाले भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक के महत्व को बताने आदि के उद्देश्य से [illegible]र्तित किया जा रहा है। श्रमणाचार्यश्री विशुद्धसागरजी ने समरसता, भाईबन्धुत्व का आह्वाहन करते हुए भगवान बाहुबली के गुणों को धारण करने का सन्देश देते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति में भगवान बनने की क्षमता है। सभा को प्रदीपकुमार जी कासलीवाल, कीर्ति पांड्या, राजकुमार जी पाटौदी, पं सुरेश मारौरा, विद्वत्परिषद् के महामंत्री डॉ. महेन्द्र मनुज आदि ने संबोधित किया। श्री महेन्द्रकुमार जैन एलआई.सी, सुबोध मारौरा आदि ने संचालन में सहयोग किया। जैन प्रख्यात विद्वान् पंरतनलालजी ने रथ पर केशर से स्वस्तिक बना कर प्रारम्भ किया।

यह रथ सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में भ्रमण करेगा। प्रदेश के विभिन्न जिलों–नगरों में जहां जो कलश आवंटन समिति और युवा सम्मेलन के संयोजक हैं उन्हें ही रथ प्रवर्तन का प्रभार सोंपा गया है। मुख्य संयोजक श्री हंसमुख गांधी हैं जो कि महामहस्तकाभिषेक महोत्सव के संरक्षक, कलश आवंटन समिति के संयोजक और युवासम्मेलन के मुख्य संयोजक भी हैं। पं सुरेश मारौरा पूर्ण मध्यप्रदेश में रथ के साथ भ्रमण करते हुए रथ का संयोजन कर रहे हैं। यह रथ पहले इन्दौर के विविध 15 स्थानों में 15 दिन तक रथ भ्रमण करेगा। इन्दौर के प्रमुख संयोजक–कीर्ति पाण्डया, संजय जैन 78, ऋषभ पाटनी, देवेन्द्र सोगानी, प्रतिपाल टोंग्या, पदमचंद मोदी और सुभाष सेठिया हैं।

श्रवणबेलगोला से विभिन्न प्रान्तों में प्रवर्तन हेतु इस तरह के आठ रथ प्रवर्तित किये गये हैं। ज्ञातव्य है कि राष्ट्रगौरव आचार्यरत्न 108 श्री वर्धमानसागरजी महाराज के तत्वावधान व द्विशताधिक पिच्छीधारी श्रमण मुनिराजों के सान्निध्य में श्रवणबेलगोला की विश्वप्रसिद्ध 57 फीट की भगवान बाहुबली की प्रतिमा का पापम्परिक द्वादशवर्षीय महामस्तकाभिषेक 17 फरवरी 2018 से प्रारम्भ होगा। उसके आलोक में श्रवणबेलगोला में विविध कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। जिनमें राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियां, महिला सम्मेलन, पत्रकार सम्मेलन, युवा सम्मेलन, प्राचीन पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी, प्राकृत–संस्कृत संगोष्ठी, विद्वत्सम्मेलन, प्रभावना रथ संचालन आदि कार्यक्रम प्रवर्तमान हैं।

–आशा जैन,
परियोजनाधिकारी, इन्दौर

'जैनत्व की रक्षा कैसे हो?' शीर्षक संगोष्ठी सम्पन्न

तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ की मंत्री श्रीमती उषा पाटनी के संयोजकत्व में गुप्ति सदन, कालानी नगर, इंदौर में दिनांक 27.08.2017 को विद्वत् गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता गुप्तिधाम गन्नौर से पधारी बाल ब्र. विदुषी सुमन शास्त्री ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री मनोज सेठी उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार रखते हुए महासंघ के कार्याध्यक्ष डॉ. अनुपम जैन, इंदौर ने कहा कि 'जैनत्व की रक्षा में हर व्यक्ति का योगदान अपने–अपने हिसाब से हो सकता है। उन्होंने कुछ बिन्दुओं को विशेष रूप से रेखांकित किया।

1. जैन समाज की जनसंख्या वृद्धि की दर ऋणात्मक है। 2011 के आँकड़ों के अनुसार 10 युवा दम्पत्ति (20 व्यक्ति) केवल 14 बच्चों को जन्म दे रहे हैं। ऐसी स्थिति में जनसंख्या में ह्रास होना स्वाभाविक है। हमें इसे रोकना होगा।

2. आँकड़ों के अनुसार 0–6 और 0–21 आयु वर्ग में भी जैनों की संख्या घट रही है। कुछ समय बाद जैन समाज बूढ़ों का समाज बन जायेगा और युवाओं की कम तादाद समाज को कैसे शक्ति देगी? यह विचारणीय है।

3. विजातीय विवाहों ने कोढ़ में खाज का काम किया है। यदि हमारी बेटी दूसरे समाज में जाती है तो वह तो विधर्मी बन ही जाती है किन्तु यदि विजातीय बेटी हमारे घर में आती है, तो वह अपने प्रभाव से हमारे संस्कारों और परम्पराओं को नष्ट–भ्रष्ट कर देती है। दोनों स्थितियों में समाज का अहित है।

4. बड़ी मात्रा में युवाओं के अविवाहित रहने का चलन भी उचित नहीं है। जिनमें वैराग्य के भाव हो, दीक्षा की ललक हो वे युवा अविवाहित रहें तो हमें गौरव होता है किन्तु वैराग्य से दूर अज्ञात कारणों से जब हमारे युवा अविवाहित रहते हैं तो इससे समाज का नुकसान होता है। जैनत्व की रक्षा हेतु जैन समाज को सम्हालना जरूरी हैं। हम तीर्थक्षेत्रों के विकास, प्राचीन धरोहरों एवं पाण्डुलिपियों की रक्षा, युवाओं/बालकों में संस्कारों की वृद्धि से ही जैनत्व को बचा सकते हैं।

डॉ. प्रगति जैन ने आहार शुद्धि पर जोर देते हुए कहा कि खान–पान की शुद्धि बगैर हम संस्कारों को बचा नहीं पायेंगे। बाहर खाने एवं रात्रि भोज का चलन हमारे संस्कारों को ध्वस्त कर रहा है। जैनत्व की रक्षा हेतु इस पर ध्यान देना जरूरी है।

डॉ. संगीता विनायका ने कहा कि श्रवणबेलगोला के राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में उपस्थित इंदौर की महिला नेत्रियों ने बहुत अच्छी छाप छोड़ी है। आज जरूरत इस बात की है कि सब बहनें एकजुट होकर जैनत्व की रक्षा करें। जैन धर्म तो शुरू से पानी छानकर पीने की बात करता था किन्तु आज जब वैज्ञानिक कह रहे हैं तो हम मान रहे हैं। बोतल बंद पानी और R.O. वाटर स्वास्थ्य के लिये हितकर नहीं है। मोटे छन्ने से छानकर, घर में तैयार किया गया शुद्ध पानी ही स्वास्थ्य के लिये हितकर है। यही जैन विधि है।

संयोजिका श्रीमती उषा पाटनी ने कहा कि हमारी बहनें ही खान–पान के स्वरूप को विकृत होने के लिये जिम्मेदार हैं। आज घर में विभिन्न प्रकार के पकवान बनाने की बजाय हम बच्चों को रुपये देकर कह देते हैं कि बाजार से ले आओ। यह प्रवृत्ति ठीक नहीं है। हमें अगर समाज को बचाना है और जैनत्व की रक्षा करना है तो हमें घर पर स्वादिष्ट पकवानों को बनाने की कोशिश करनी चाहिये।

श्री मनोज सेठी के आभार प्रदर्शन के साथ संगोष्ठी सम्पन्न हुई। सभा में शताधिक स्त्री–पुरुष उपस्थित रहे।

(विजय कुमार जैन)
महामंत्री

श्रवणबेलगोला में आचार्य शांतिसागर पुण्यतिथि आचार्य वर्धमानसागरजी महाराज के सान्निध्य में

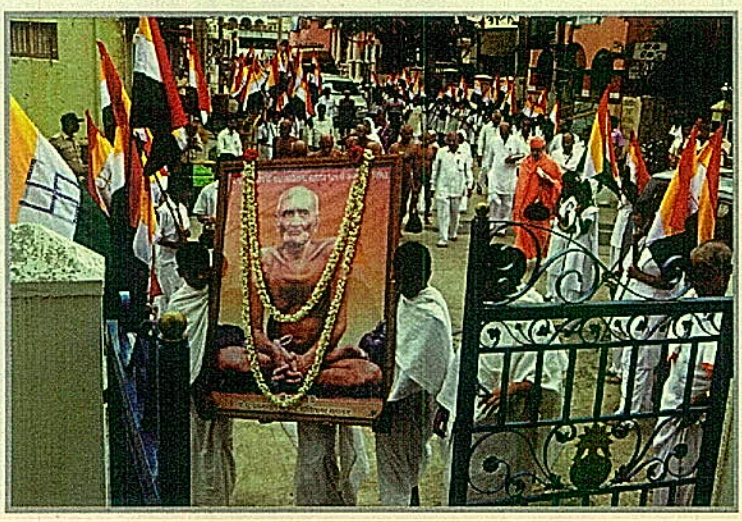

Jain site with Bahubali image deemed protected

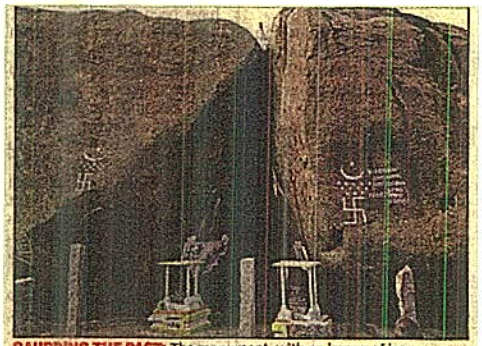

GAURDING THE PAST: The monument, with an image of icon Bahubali, is one of the few in important Jain sites in Tamil Nadu

Chennai: A hillock with Jain rock carvings in Villupuram district, dating back more than 1,000 years, has been declared a protected monument by the state government. The monument, with an image of icon Bahubali, is one of the few in Tamil Nadu that prove Jainism thrived in the region in the past.

In a recent notification, tourism, culture and religious endowments secretary Apurva Varma, said Andi Malai, located at Solavandi- puram village in Tirukovilur taluk and filled with Jain sculptures, beds and inscriptions, was declared protected under the Tamil Nadu Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act. It is aimed at preventing vandals from destroying the important monuments and buis- nessmen from carrying out any quarrying activities.

Jain scholar K Ajithadoss said Andi Malai was the 21st Jain site to be declared a protected monument by the state government. Another 48 are under the purview of the Archaeological Survey of India (ASI), he said, adding that every ancient Jain temple in Tamil Nadu had a Bahubali idol. "The Andi Malai hillock has carvings that can be traced to the 10th century. Parshwanath, Mahavir, Dharma Devi and Padmavati are the other images that are found," he said.

Bahubali was the son of Rishaba, the first Jain Tirthankara. He defeated his brother Bharath at a time when the latter attempted to conquer various kingdoms, including that ruled by Bahubali. Later, he (Bahubali) attained salvation. "There are around 135 Jain sites with temples in the state, most of them in Kancheepu- ram, Cuddalore, Vellore, Villupuram and Tiruvannamalai. In the case of carvings on boulders and caves, we can find the images of Bahubali," Ajithadoss said. Several inscriptions show that Jainism's connections with Tamil Nadu date back more than 2,000 years. "Steps must also be taken to declare the Jain site at Karupankundru near Maturantakam in Kan- cheepuram district a protected monument," he said.

C Santhalingam, secretary of Madurai-based Pandya Nadu Centre for Historical Research, said declaring the monument a protected site would help preserve it. "The hillock cannot be used for quarrying. The monument would come under the security cover and no construction can take place within aradius of 300 meters around the deemed site he added.

युवा इन्जीनियरों ने भव्यता से मनाया दशलक्षण पर्व

पुणे । श्री चन्द्रप्रभु जिनालय मगरपट्टा पुणे में दशलक्षण पर्व में प्रतिदिन शान्ति धारा तथा १०८ जिन युवाओं ने सामूहिक पूजन की, रात्रि में प्रोजेक्टर द्वारा नई तकनीक से बने धार्मिक गेम्स किए गए । डा० नीलम जैन के रात्रि में दशधर्मों की वैज्ञानिकता तथा दशलक्षण धर्म के पृष्ठ में वैज्ञानिक चिन्तन सरल शैली में समझाया गया जिसमें युवा वर्ग बहुत प्रभावित हुआ । अनन्त चतुर्दशी को प्रतिक्रमण को नवीन ढंग से कराया गया लगभग ३०० युवक युवतियां एवं बच्चों ने ४८ मिनट तक प्रतिक्रमण किया, प्रथम बार युवा सन्मति शाह (इंजी०) संदीप जैन (इंजी०) द्वारा ११ उपवास किए गए हैं। छोटे बच्चों ने भी एकासना, उपवास किए तथा अनेक महिलाओं ने बेले, तेले, चौले किए । सभी का सामूहिक पारणा कराया गया। श्री चन्द्रप्रभु महिला मण्डल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गए। डा० ममता जैन, मयंक जैन, सौरभ जैन, सोनिया जैन, स्मिता जैन, विभा जैन, श्रुति जैन, गुणमाला जैन, सुभाष जैन द्वारा धार्मिक गेम्स तैयार किए। डा० नीलम जैन का समाज द्वारा भव्य सम्मान किया गया।

No More Grudges

The Jain community celebrates Kshama Vani that exalts the act of forgiveness, writes NARAYANI GANESH

Hurting another — whether a human being, or any other living being, including animals and insects — is the worst thing to do, the popular writer-editor Khushwant Singh would, often say. "I am an agnostic — I neither believe nor disbelieve in God. Yet, if I have to choose a religion, I would vote for ahimsa and...that would make me a Jain," he would say, laughing.

On deeper thought, though, the venerable Sardar was right; ahimsa, like a magic bullet, could help us oust violence from our lives. Besides following a nonviolent lifestyle, the closest one can get to becoming godly is to simultaneously cultivate the art of forgiveness. This is perhaps why Jainism, a faith that advocates nonviolence, has also seen it fit to designate a special day once a year, Kshama Vani, to celebrate *kshama,* forgiveness.

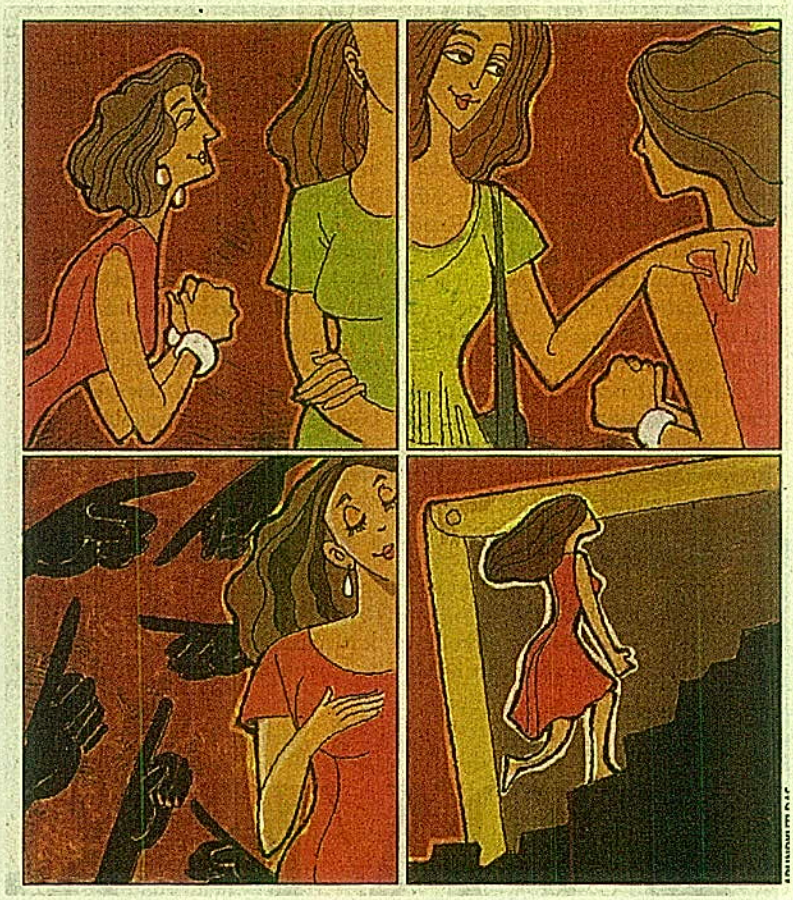

Nature Of Atman

Kshama Vani happens at the conclusion of the annual 10-day Paryushan Parva festival when meditation, prayer and fasting is practised, in a bid to undergo self-purification. It culminates in Kshama Vani, the final purging of toxins like long-held grudges and festering ill-will arising out of hurt.

"Please forgive me, for all the acts of hurt I might have inflicted on you, knowingly ' or unknowingly" — this is the common refrain among those who take it upon themselves to celebrate the Day of Forgiveness in all earnestness.

What do revered Jain monks have to say about this?

Acharya Vardhmansagar- ji who recently led a group of 44 male and female monks from Rajasthan to Karnataka to participate in the 2018 Mahamastakabhisheka of Bahubali at Shravanabelagola, says, "To forgive is the true, nature of Atman. An angry man forgets his nature and does not forgive. See, even monks have karma but they practice *sadhana* and are able to overcome karma. If someone insults you, you need not react negatively. You can forgive. But that does not mean you ignore the wrongdoing. You must make them understand what they have done and then forgive them. Parents scold their children when they do wrong; they reprimand them, but they also subsequently forgive them because they love them.

"If you have *abhimaan,* pride, you cannot forgive. So learn to overcome your ego first, then it becomes simpler to see why you need to forgive.

To forgive is to heal; to forgive is to acknowledge that human beings are not perfect, and that it is in our best interest to overcome the baggage of the past and look to the future together, in good spirit," concludes the Acharya.

Kshama Burns Karmas

Sri Charukeerthy Bhattaraka Swamiji, a disciple of Vidyasagarji, heads the math in Shravanabelagola. He is the moving force behind the once-in-12-year head-anointing ceremony, of the towering Bahubali atop the hill, a living stone monument tribute to Tirthankara Rishabdev's son.

Swamiji says, "In my experience, in Jainism importance is given to *dhy* and *tapasya.* For karma *naash* — in order to overcome karma —meditation is necessary, as it burns all previous karmas. Those who practise dhyana need to also practise forgiveness, otherwise, you cannot really practise dhyana.

"Kshama removes *krodh,* anger. Anger gives so much *dukh,* unhappiness and suffering, and makes the mind *chanchal,* restless. You can overcome anger with forgiveness. *Man ki chanchalta* (turbulence in the mind) becomes less. *Jaane anjaane* (knowingly or unknowingly) we make so many mistakes or hurt others. Krodh disturbs the mind. Krodh incites violence.

"When you forgive, you feel peaceful. But first, forgive your- self." He quotes the twenty-fourth Tirthankara, Mahavira, who said, *Ka- mami saave jeevanam* — that is, in the process of action-reaction, krodh is like thorns, and kshama is the flower.

"An angry person makes few or no friends. Everyone runs away from him. Krodh breaks family and society, divides people whereas kshama binds family and society and brings people together".

Camping in the capital during *Chaturmaas* — the rainy season — are two eminent Jain monks, one from Lucknow and the other from Pune. Muni Saurabh Sagar from Lucknow, says we should wash away anger, ego and other impurities of the mind and purify our soul. "I forgive everyone and seek forgiveness from everybody. I wish a blessed life for everyone."

Acharya Vijay Nityanand Surish- warji Maharaj from Pune, feels that as humans we tend to commit mistakes, but to not admit it, is the greatest mistake. He points out that when, we seek forgiveness and also forgive others without holding a grudge, there will be abundance of peace and harmony. "Forgiveness is the essence of devotion and penance and this is the message of Mahavira," he says. ■

- from Times of India dt 3/9/2017 Delhi

आचार्य विशुद्धसागर कृत प्रकृष्ट देशना पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न

आचार्य कुन्दकुन्द कृत महान ग्रंथ प्रवचनसार की 28 वीं गाथा पर दिये गये अपने विस्तृत तुलनात्मक प्रवचनों का संकलन प्रकृष्ट देशना के नाम से 500–500 पृष्ठों के 2 भागों में प्रकाशित किया गया है। इंदौर में वर्षायोगरत आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के 21 सदस्यीय संघ के पावन सान्निध्य में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन तत्त्व चिंतन वर्षायोग समिति द्वारा डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत के संयोजकत्व में समवशरण दि. जैन मंदिर, कंचन बाग के विशाल परिसर में किया गया। इस संगोष्ठी में 30 से अधिक विद्वानों ने सहभागिता दी।

स्थानीय संयोजक डॉ. अनुपम जैन ने बताया कि संगोष्ठी में अध्यात्म और दर्शन से संबंधित लगभग 25 आलेखों का वाचन प्रतिदिन 2 सत्रों में किया गया। प्रातः कालीन और अपरान्ह कालीन दोनों सत्रों में उठाये गये प्रश्नों का आगम सम्मत समाधान पूज्य आचार्य श्री द्वारा दिया गया।

इंदौर के प्रबुद्ध श्रावक–श्राविकाओं ने संगोष्ठी का भरपूर आनंद लिया। वर्षायोग समिति द्वारा विद्वानों का भाव–भीना स्वागत किया गया।

– डॉ. अनुपम जैन

आचार्य श्री विशुद्धसागर एवं प्रकृष्ट देशना

-डॉ.अनुपम जैन, इंदौर

अध्यात्म योगी आचार्य श्री विशुद्धसागर जी ने अष्टान्हिका पर्व के पूर्व 2013 में संघ के साधुओं से आत्मीय चर्चा में कहा कि :–

अंतिम समय में शास्त्र भी काम नहीं आएँगें, अन्तरंग साधना ही सल्लेखना में सहायक ही बनेगी। बेटा! अंतिम समय में पलक उठाने की भी सामर्थ्य नहीं बचती। बाह्य साधनों की आसक्ति अंतरंग साधना भंग कर देती है। आंतरिक आत्मसाधना ही अंतिम समय में साधन बनती है।(अध्यात्म योगी,पृ. 53)

किन्तु जब श्रावकों को संबोधित करना था तो 4.9.2017 को बास्केटबाल स्टेडियम में श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के आचार्य श्री शिवमुनि जी एवं उनके संघ की उपस्थिति में इन्दौर में कहा कि **'भगवान महावीर ने तो मात्र जैन धर्म प्रतिपादित किया। उन्होंने कभी कोई पंथ नहीं बनाया। गणित एवं व्याकरण जैन दर्शन ने ही दिया है। जो शब्द है, वह ज्ञान नहीं और जो ज्ञान है वह शब्द नहीं।'(दैनिक भास्कर,(इन्दौर) 5.9.17)**

पात्र एवं समय के अनुरूप विषय को प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता पूज्य आचार्य श्री में है एवं यही कारण है कि वे आज आबाल–वृद्ध, शिक्षित–अशिक्षित, स्त्री–पुरुष, मुनिभक्त–मुमुक्षु, दिगम्बर–श्वेताम्बर सभी में समान रूप से लोकप्रिय हैं।

मैं आबंटित विषय के अनुरूप सर्वप्रथम आचार्य श्री का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जीवनवृत्त

भिण्ड जिले के रूर ग्राम में 18.12.1971 को पिताश्री रामनारायण जी एवं मातुश्री रत्तीबाई के घर जन्में बालक राजेन्द्र के मन में वैराग्य के भाव एवं दिनचर्या में करुणा तथा वात्सल्य का भाव तो बचपन से ही था किन्तु 16.11.88 को बरासों (भिण्ड) में ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर क्रमशः क्षुल्लक (11.10.89) ऐलक (19.06.91) एवं मुनि दीक्षा श्रेयांसगिरि (पन्ना) में आचार्य श्री विरागसागरजी से 21. 11.91 को धारण की। आपकी निर्दोष चर्या, प्रतिभा एवं क्षमताओं का आकलन कर दीक्षा गुरु आचार्य श्री विरागसागर जी ने **औरंगाबाद में उन्हें 31 मार्च 2007 को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर आचार्य विशुद्धसागर बना दिया।** 26 साधकों को मुनिदीक्षा देने वाले पूज्य आचार्य श्री का परिवार भी धन्य है क्योंकि आपके पिता जी ने समाधिस्थ मुनि श्री विश्वजीत सागर जी एवं माता जी ने समाधिस्थ क्षु. श्री विश्वमती माता जी के रूप में अपने मानव जीवन को सार्थक किया। आपके सभी 5 भाई एवं 2 बहनें अपने श्रावक धर्म के पालन में सक्रिय हैं।

मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, राजस्थान, कर्नाटक आदि प्रान्तों में सतत् विहार कर एक ओर आपने समाज को सत्पथ पर लगाया तो सैकड़ों युवाओं को भी

तत्त्वबोध कराकर मोक्ष पथ पर आरूढ़ किया।

आपने अब तक यदि 75 से अधिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में पावन सान्निध्य प्रदान कर पाषाण को जिनबिम्ब बनाया तो 100 से अधिक कृतियों का भी सृजन किया है। मैं यहाँ आपकी कृतियों को सूचीबद्ध कर रहा हूँ। इतने विपुल साहित्य का सृजन हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं पर आपके अधिकार को व्यक्त करता है।

कृतियाँ

1–17. समयदेशना (17 भाग) (समयसार)
18–20. नियम–देशना (3 भाग) (नियमसार)
21. पुरुषार्थ–देशना (पुरूषार्थसिद्धिउपाय)
22. अध्यात्म–देशना (योगसार)
23. तत्त्व–देशना (तत्त्वसार)
24. प्रेक्षा–देशना (वारषाणुपेक्खा)
25. सर्वोदयी देशना (इष्टोपदेश)
26. स्वरूप देशना (स्परूपसम्बोधन)
27. श्रावक धर्म–देशना (रत्नकरण्ड–श्रावकाचार)
28. सागार–अनगार धर्म देशना (रयणसार)
29. सामायिक–देशना (भावना द्वात्रिंशतिका)
30. श्रमण धर्म–देशना (दस धर्म)
31–36. परमार्थ तत्त्वदेशना (6 भाग) (तत्त्वानुशासन)
37. तत्त्वार्थ–देशना (तत्त्वार्थ सूत्र)
38–39. प्रकृष्ट–देशना (2 भाग)(प्रवचनसार)
40. समाधितंत्र अनुशीलन
41. इष्टोपदेश भाष्य
42. स्वरूप सम्बोधन परिशीलन
43. सोलककारण भावना अनुशीलन
44. शुद्धात्म तरंगिणी (चिंतन)
45. जीवन रहस्य
46. अध्यात्म प्रमेय
47. निजात्म तरंगिणी (चिंतन)
48. निजानुभव तरंगिणी (चिंतन)
49. स्वानुभव तरंगिणी (चिंतन)
50. शुद्धात्म काव्य तरंगिणी (कविता)
51. प्रवचन प्रभा
52. आत्मबोध (चिंतन)
53. आत्माराधना (भक्तिसंग्रह)
54. पंचशील सिद्धांत (पंचाणुव्रत)
55. बोधिसंचय (नीतिवाक्य)
56. अमृत बिन्दु (नीतिवाक्य)
57. अर्हत्–सूत्र (नीति वाक्य)
58. देशना–बिन्दु (नीति वाक्य)
59. देशना–संचय (नीति वाक्य)
60. तत्त्व–बोध (प्रवचनांश)
61. आइना (प्रवचनांश)
62. विशुद्ध–मुक्तिपथ
63. विशुद्ध काव्यांजलि
64. विशुद्ध वचनामृत (नीति वाक्य)
65. सुभाषित देशना
66. सद् देशना
67. प्रवचन पीयूष
68 प्रवचन प्रदीप
69. चिंता रहस्य
70. तत्त्व तरंगिणी (प्रवचनांश)
71. स्वानुभव (कविता)
72–73. सद् ज्ञान देशना (2 भाग) (ज्ञानांकुश)
74–79. सद् देशना (6 भाग) (सार–समुच्चय)
80–84. सुभाषित देशना (5 भाग) (सुभाषित रत्नावली)
85. शब्द अध्यात्म पंथी का
86. सार सूत्र
87. सामायिक कैसे
88. गुरवो भवन्ति शरणं
89. भबाब्धेस्तारको गुरु
90. बोध वाक्यामृत
91. दिव्य वयणं
92. भव्य वयणं
93. अध्यात्म अमृत
94. अध्यात्म वाणी
95. चिंता रहस्य
96. जीवन रहस्य
97. पंचशील पद्यानुवाद चंद्रिका

98. स्वानुभव पद्यानुवाद चंद्रिका
99. अध्यात्म प्रमेय पद्यानुवाद चंद्रिका
100. चिंतन चंद्रिका
101. सूक्ति सुधा
102. वात्सल्य पर्व (रक्षा बंधन)

मात्र इतना ही नहीं आपकी कृतियों एवं आपके जीवन वृत्त पर भी क्रमशः निम्नांकित 8 एवं 7 कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

साहित्य संबंधी अन्य कृतियाँ

1. समाधितंत्र इष्टोपदेश समीक्षा
2. पुरुषार्थ देशना अनुशीलन
3. अध्यात्म देशना अनुशीलन
4. तत्त्वदेशना समीक्षा
5. स्वरूप सम्बोधन परिशीलन विमर्श
6. सर्वोदयी देशना समीक्षा
7. समयदेशना विमर्श
8. स्वरूप देशना विमर्श

जीवन वृत्त संबंधी कृतियाँ

1. आदर्श श्रमण
2. अध्यात्म का सरोवर
3. स्वसंवेदी श्रमण
4. प्रत्यग् आत्दर्शी
5. अध्यात्म योगी
6. विशुद्ध दर्शन
7. विशुद्ध शतक

आपके इस विराट व्यक्तित्व एवं बहुआयामी प्रवृत्तियों के कारण ही पूज्य गुरुवर द्वारा की जा रही प्रभावना को व्यक्त करते हुए अशोक नगर के शिक्षक **श्री रामसेवक सोनी** लिखते हैं:–

हे मुनिवर,
आपका उद्बोधन
आपकी प्रभावना
जिज्ञासुओं में
मुमुक्षुओं में
ज्ञानियों में
संचारित होती है
सम्यक
दर्शन की प्रभावना
प्रभावना नहीं है
शारीरिक सौन्दर्य
प्रभावना नहीं है
दिखावा
सच्ची प्रभावना
एकाकार
करती है
विचारों को
कर्म को
ज्ञान को
उस
परम सत्ता की ओर
जो
चर–अचर में
व्याप्त है
प्रभावना
मात्र पूजन
नहीं है
प्रभावना है
जीवों के प्रति
दया–ममता
और
उससे भी बढ़कर है
जीवों के प्रति
संवेदना

प्रायः कहा जाता है कि आचार्य श्री **अध्यात्म–न्याय प्रवीण** हैं। यह अर्द्धसत्य है। मेरा मत है कि आप चारों अनुयोगों में प्रवीण हैं। यह सत्य है कि आपकी अध्यात्म में विशेष रुचि है। आचार्य श्री अमृतचंद्र सूरि की कृति पुरुषार्थसिद्धयुपाय,जो अहिंसा मूलक जीवन शैली को बताने वाली रचना है, की विवेचना करने वाली पुरुषार्थ देशना में विषय को अच्छे रूप में विवेचित किया है निम्न 2 अंश देखिये :–

'जिनवाणी माता कह रही है तुम मेरी भाषा तो

समझो, हम तुमको भगाना नहीं, बुलाना चाहते हैं। तूने संसार की माताओं के आंचल का दुग्धपान तो अनेक बार किया है, एक बार मेरे आंचल का पान कर ले, तेरी माँ ने तो केवल दो आंचल पिलाये हैं, पर बेटा ! मेरे आंचल चार हैं और यह चार अनुयोग हैं।' (पृष्ठ–3) आगे भी देखिये :–

भो ज्ञानी! दो–सौ–पच्चीसवीं कारिका को पढ़ लो–जो मात्र निश्चयवाला है, तो वह मिथ्यादृष्टि और व्यवहार मात्र है वह भी मिथ्यादृष्टि है। आगम में तो पाँच प्रकार के मिथ्यात्व में एक अज्ञान नाम का भी मिथ्यात्व है। इसीलिये आचार्य अमृतचन्द्र स्वामी कह रहे हैं कि निश्चय और व्यवहार से युक्त अवस्था ही सम्यक्त्व है।

आज प्रातः कालीन सत्र में देश के मूर्धन्य विद्वानों की उपस्थिति के कारण महाराज जी ने अशुभोपयोग,शुभोपयोग एवं शुद्धोपयोग को अधिक शास्त्रीय रूप में समझाया जो थोड़ा जटिल एवं तकनीकी दार्शनिक शब्दावली में होने के कारण थोड़ा मुश्किल था किन्तु आचार्य देवसेन कृत तत्त्वसार पर दिये गये 49 प्रवचनों का संकलन **तत्त्वदेशना** है। इसमें भेद विज्ञान को समझाते हुए आचार्य श्री कहते हैं :–

'भो ज्ञानी ! भेद–विज्ञान यानि क्या? मिलावट को मिलावट समझना, वास्तविक को वास्तविक समझना। मिलावट को समझ लिया, उसी का नाम भेद–विज्ञान है। (पृष्ठ–63)

आत्मा में कर्म मिल गये, (जिसने इन दोनों को एक) मान लिया, उसके भेद–विज्ञान का अभाव है। कर्म भिन्न है, आत्मा भिन्न है ज्ञानी ऐसा अनुभव करता है ज्ञानी। संसार का जो भ्रमण है, वह मिश्र–अवस्था के कारण ही है। देखों, तिल को पिलना पड़ता है, क्योंकि उसके अन्दर स्निग्धता है। तुम्हें संसार में क्यों रुलना (भटकना) पड़ रहा है? क्योंकि तुम्हारे में राग की स्निग्धता है। भो चेतन! तेल की चिकनाई तो जल्दी दूर हो जाती है, पर राग की चिकनाई बड़ी प्रबल है।' (पृष्ठ–63)

बड़े संक्षेप में बताते हैं **'जीव अन्य है, पुद्गल अन्य है, यही तत्त्व का सार है, शेष इसका विस्तार है।'** (पृष्ठ–66)

पूर्व में इंदौर में 2007 में आपका वर्षायोग तथा 2010 में वाचना के मध्य हमें आपका सान्निध्य मिला है। मैंने पूज्य गुरुवर की स्वरूप–देशना आदि अन्य भी अनेक कृतियाँ पढ़ी हैं। **स्वरूप संबोधन परिशीलन (2011)** के संपादन का भी अवसर मिला। इस रूप में मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि पूज्य आचार्य श्री की कृतियों में जिन गुणों को मैं महसूस करता था उन्हें अन्य अनेक विद्वानों ने भी पुष्ट किया है यानि मेरी धारणा सत्य है। विषय लम्बा न हो जाये इसलिये अन्य कृतियों पर स्वयं को बोलने से रोकते हुए प्रकृष्ट देशना पर स्वयं को केन्द्रित कर रहा हूँ।

प्रकृष्ट देशना

आचार्य श्री ने प्रकृष्ट देशना कृति के प्रारंभ में ही लिखा है **'प्रवचन का अर्थ ही है तत्त्व, प्रवचन का अर्थ ही है ज्ञान। जो विशुद्ध ज्ञान है, विशुद्ध तत्त्व है, वही प्रवचन है। प्रकृष्ट वचन का नाम ही प्रवचन है। ऐसे प्रकृष्ट वचन का जो सार है, वह अरहंत की दिव्यध्वनि है। अरहंत की जो दि देशना है, वही प्रवचनसार है।'** (भाग–1, पृष्ठ–1)

इसी प्रवचनसार पर जो उत्कृष्ट देशना है उसी का नाम है प्रकृष्ट देशना।

जैन धर्म के महान आचार्य, आचार्य कुन्दकुन्द की श्रेष्ठतम कृतियों में से एक प्रवचनसार है। हमारा दुर्भाग्य है कि आज 84 पाहुड़ों का मिलना तो दूर उनके नाम भी हमें ज्ञात नहीं है। आचार्य कुन्दकुन्द के काल पर भी बहुत उहा–पोह हुआ है। विभिन्न मतों को पढ़ने के बाद व्यक्तिशः मेरी मान्यता है कि आचार्य कुन्दकुन्द दूसरी शताब्दी ई. के हैं, क्योंकि षट्खण्डागम पर आपने परिकर्म नामक टीका लिखी है। आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रंथ अध्यात्म के सिरमौर हैं फलतः आपके ग्रंथों पर आचार्य अमृतचन्द्र, आचार्य जयसेन, आचार्य बालचन्द्रदेव, आचार्य प्रभाचन्द, आचार्य मल्लिषेण और हेमराज ने टीकायें लिखी हैं। 3 भागों ज्ञानाधिकार, ज्ञेयाधिकार और चारित्राधिकार शीर्षक 3 भागों में विभक्त प्रवचनसार की सभी टीकायें अपनी–अपनी विशेषताओं से निहित हैं। किन्तु वर्तमान काल के श्रावकों के लिये देवनागरी भाषा में विषय के हार्द्र को स्पष्ट करने वाली कृति की महती आवश्यकता थी क्योंकि बिना भाषा की अनुकूलता के विषय समझ में नहीं आता। पूज्य आचार्य श्री ने बहुत सरल शब्दों में अन्यान्य परम्पराचार्यों के मतों को संजोते हुए यह अद्भुत देशना प्रस्तुत की है। जिसके 500–500 पृष्ठों के 2 भागों में मात्र 28 गाथाओं की देशना लिखी गयी है। वास्तव में चूर्णि, टीका, भाष्य, वृत्ति, देशना आदि सभी मूल ग्रंथ के विषय को ही स्पष्ट करने वाले होते हैं। बात को कहने का उनका एक अंदाज देखियें

:–

'जिसके पास जो विद्या होती है, वह अपनी विद्या का प्रयोग कर ही लेता है। जिस भाषा का भाषी होता है, उसका एक ही शब्द उसके प्रान्त का बोध करा देता है। जिस तत्त्व का ज्ञाता होता है, उसका एक शब्द भी उसके ज्ञान का बोध करा देता है। वक्ता की भाषा प्रारंभ होते ही वक्ता के तल का बोध हो जाता है। इसलिए प्रवचन तो अनेक स्वरूपों में होते हैं, पर प्रवचन का रूप एक ही होता है। अर्हत्वाणी जहाँ है, मैं मात्र उसे ही प्रवचन मानता हूँ, बाकी भाषा है।' (भाग–1,पृष्ठ–10)

इस वास्तविकता का ज्ञान होने के कारण पूज्य आचार्य श्री ने अत्यन्त प्रामाणिकता के साथ शोध के मानकों का पालन करते हुए टीका साहित्य के गौरव को बढ़ाते हुए प्रकृष्ट देशना की रचना की है।

परम्परा के ज्ञान को आगे बढ़ाने में टीका साहित्य का बहुत महत्त्व है। आचार्य उमास्वामी जी के तत्त्वार्थ सूत्र पर आचार्य पूज्यपाद, आचार्य अकलंक एवं आचार्य विद्यानन्द सहित बीसियों टीकायें दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्परा के आचार्यों/मुनियों ने लिखी। श्वेताम्बर परम्परा में तो जिनभद्रगणि, आचार्य शीलांक, हेमचन्द्रसूरि, अभयदेव सूरि ने विशाल साहित्य का निर्माण किया है। सूर्य प्रज्ञप्ति, चन्द्रं प्रज्ञप्ति जैसी श्वेताम्बर परम्परा की कृतियाँ तो मलयगिरि की टीका के माध्यम से ही उपलब्ध हैं।

षट्खण्डागम एवं कसायपाहुड़ भी हमें आज टीका के साथ ही उपलब्ध है। कुछ लोग कहते हैं कि पूज्य आचार्य श्री का ज्ञान उपनिषदों पर आधारित है। कोई कहता है कि वे मुमुक्षुओं को प्रिय बातें बोलते हैं। मेरी दृष्टि से यह सारी बातें निरर्थक एवं कपोल कल्पित है। एक जिज्ञासु को पढ़ना है तो सब कुछ पढ़ना है। तभी तो वह तुलनात्मक रूप से विषय का विवेचन कर सकेगा। दिगम्बरत्व एवं मुनि परम्परा के प्रति उनका बहुमान निम्न उद्धरण में दृष्टव्य है :–

'ज्ञानी ! भात बर्तन नहीं है, भात आग नहीं है। आग और बर्तन के बिना भात बना भी नहीं है। दृष्टान्तों पर ध्यान दीजिए, आग के बिना, बर्तन के बिना भात बना नहीं है और आग बर्तन या भात बनी नहीं है। ऐसे ही पिच्छी–कमण्डलु के बिना, दिगम्बर भेष के बिना दिगम्बर मुनि होता नहीं है, पर दिगम्बर मुनिभेष भावमुनि होता नहीं है। (पृष्ठ–17)

इससे अधिक विद्वानों को क्या कहा जा सकता है। चारों अनुयोगों पर समान श्रद्धा रखने वाले एवं ज्ञान के साथ आचरण को बहुत महत्त्व देने वाले आचार्य श्री 14 वीं गाथा की व्याख्या में कहते हैं :–

'जिसके पास समयसार की दृष्टि होगी उसका चरणानुयोग पवित्र हो जायेगा। जो चरणानुयोग से शून्य है और कहता है कि मैं समयसार दृष्टि वाला हूँ, तू न समयसार वाला है, न प्रवचनसार वाला है, न श्रावकाचार वाला है, तू तो प्रमादी है। (पृष्ठ–448)

विशुद्ध रूप से दार्शनिक विषयों पर भी आपने बड़े स्पष्ट एवं सरल शब्दों में व्यवस्था दे दी :–

'अविरत सम्यग्दृष्टि जीव के कोई संयम नहीं होता। जब संयमाचरण ही नहीं है, देश संयम ही नहीं है तो स्वरूपाचरण कहाँ से? वो सम्यक्त्वाचरण है। सकलसंयम के होने के उपरान्त जो स्वरूप की लीनता है उसका नाम स्वरूपाचरण है।' (पृष्ठ–450)

प्रकृष्ट देशना के हर पृष्ठ पर कुछ न कुछ अनूठा है। उन सबकी चर्चा यहाँ शक्य नहीं है। मैं अपनी वाणी को विराम देने से पूर्व यह कहना चाहता हूँ कि **प्रकृष्ट देशना** प्रवचनसार की टीकाओं/ विवेचनाओं में अनूठी है, इससे प्रवचनसार को सरलता से समझने में मदद मिलती है। पूज्य श्री ने इस देशना के सृजन से जैन जगत पर महती कृपा की है।

अन्त में आचार्य श्री से निवेदन है कि हम प्रतीक्षा कर रहे हैं पंचास्तिकाय पर आपकी देशना की। आपने प्रातःकालीन सत्र में पंचास्तिकाय के मंगलाचरण की चर्चा की थी। समयसार, प्रवचनसार, नियमसार के बाद अब पंचास्तिकाय भी ज्यादा दिन बाकी नहीं रह सकता। पंचास्तिकाय की विवेचना विशेषतः गाथा–14 एवं 72 आदि की व्याख्या में संख्यात, असंख्यात, अनन्त, अनन्तानन्त, सप्तभंगी, अवक्तव्य आदि शब्दों के विवेचनों में जब तुलनात्मक सामग्री आयेगी तो एक सप्ताह पूर्व बास्केटबाल स्टेडियम में किया गया आपका उद्घोष **'गणित एवं व्याकरण जैन दर्शन की देन है।'** पुष्ट होगा।

★★★★

हमारे नये बने सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

संरक्षक सदस्य

श्रीमती मंजु जैन, चैन्नई

सम्माननीय सदस्य

श्री संतोष जैन 'पेंढारी', नागपुर

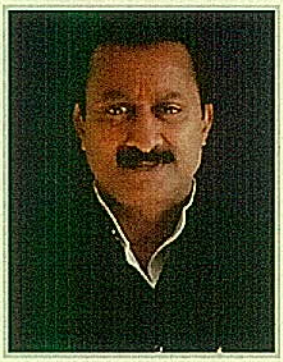

श्री हुकुम जैन 'काका',कोटा-राजस्थान

श्री दिनेश सेठी, चैन्नई

आजीवन सदस्य

श्री सुरेशकुमार कजोरीमल सेठी, चेन्नई

श्री निहालचंद भंवरलाल पहाड़िया, मदनगंज-किशनगढ़

श्री आर.जीवागन, वलपंडल

श्री सुनीलकुमार भागचंद जैन, पुडुचेरी

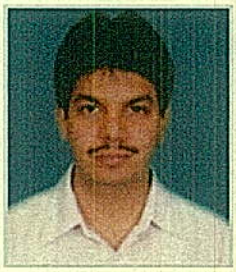

श्री सुनीलकुमार पृथ्वीराज जैन, मदुराई

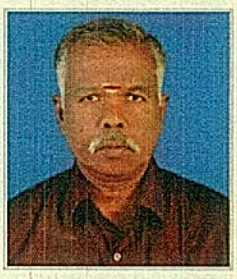

श्री बाहुबली पदमराज जैन, कलासपपकम

श्री शांतिनाथ कुबेरप्पा होटपेटी, हुबली

श्री विजयकुमारजी ज्ञानप्पा जैन, बीडर

श्री राहुल मोहन बेलकेरी, बीडर

श्री नरसिंहराज जिनेन्द्र टिके, बीडर

आजीवन सदस्य

श्री अजितकुमार वालचंद चिंदे,
बीडर

श्री ए.विजयबालन अप्पास्वामी,
नेडीमलयुनूर

श्री एस.देवदास चिन्नाराज नयनर,
पोंडिचेरी

श्री ए.उदयकुमार,
पोलूर

श्री खुशालचंद मानकचंदजी जैन,
विदिशा

श्रीमती कुशल देवेन्द्र जैन,
वडोदरा

श्री महेन्द्रकुमार रतनलाल जैन,
डोरनकल

श्री रिखबचंद पदमचंद पाटोदी,
पोण्डिचेरी

श्री सुशील गजराजजी कोठारी,
पोंडिचेरी

श्री प्रदीपकुमार प्रकाशचंद गोधा,
जयपुर

श्री ए.जिनानाथन नयनार,
सदुपेरीपलायम

श्री सेवालाल मोतीलाल जैन,
अहमदावाद

श्री अभिनन्दन सुभाष जब्बनावर,
बेलगाव

श्री सुभाष निनाप्पा जब्बनावर,
बेलगाव

श्री अजयकुमार ताराचंद बगड़ा,
हंसीपलायम

श्री ओनिल अरविंद गांधी,
सोलापुर

श्री विकास शुभकरन जैन,
महादेवपुरा

सौ.विजया अविनाश संगई,
औंध पुणे

सौ.माधुरी भरत उपाध्ये,
सोलापुर

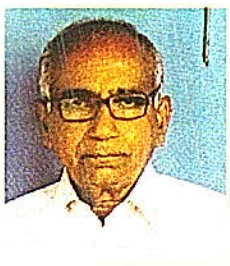

श्री अजितनाथ पारीसा उपाध्ये,
सोलापुर

सौ.तृप्ती जयप्रकाश घोंघड़ी,
सोलापुर

श्री सुदर्शन निर्मलकुमार वनकुद्रे,
सोलापुर

श्री रतनचंद पी.बप्पनकर,
कलबुर्गी

श्री ताराचंद खजांची,
जयपुर

श्री सुनील शांतिलालजी जैन,
भाईंदर

आजीवन सदस्य

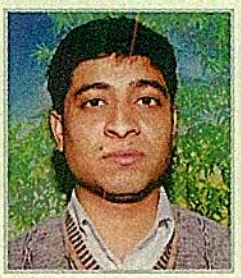
श्री संदीप राजकुमार जैन,
बरनावा

श्री अखिलेश आनंदकुमार गंगवाल,
जयपुर

श्री सी.ए.अप्पनडाई नाथन,
टीवीपुरम

श्री ए.पदमप्रभ,
ओथालवडी

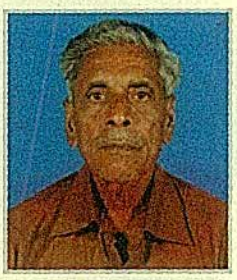
श्री राजसेकरन,
सोमासीपडी

श्री नंदकुमार बाबुराव कंगले,
सोलापुर

श्री एस. एस. वृषभसेन भट्टारकस्वामीजी,
लक्कावली

श्रीमती निशा राहुल शाह,
सोलापुर

श्री राहुल सुभाष शाह,
सोलापुर

श्री अरुण बाबुराव धुमाल,
सोलापुर

श्री मकरंद दत्तात्रय तिराले,
सोलापुर

डॉ.प्रशांत प्रकाश झरेकर,
तळेगांव

श्री संतोष धन्यकुमार जमगे,
चिंचवड

श्री राहुन प्रकाशचंद कस्तूरकर,
पुणे

सौ.प्रियंका चारित्र्यनंदन मोहरे,
सोलापुर

श्री प्रदीप बाबुराव पांढरे,
सोलापुर

सौ.रोहिणी संजय कंदले,
सोलापुर

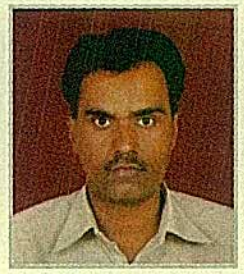
श्री किशोर प्रेमचंद म्हेत्रे,
सोलापुर

श्री भरमगोंडा के.पाटिल,
गुलबर्गा

श्री राजकुमार धरमपाल कीवडे,
गुलबर्गा

श्री रमेश राजेन्दर बेलकिरी,
कलबुर्गी

श्रीमती सुनीता सुभाषचन्द्र कपाले,
कलबुर्गी

श्री सुभाषचन्द्र चन्द्रनाथ कपाले,
कलबुर्गी

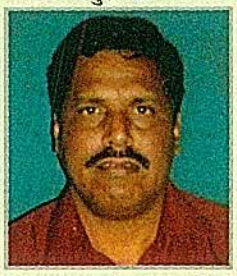
श्री पी.ऐलन गौवन पट्टूस्वामी,
मादिपक्कम

श्री अतुल धन्यकुमार जानापुरे,
आष्टी